B.A. Sanskrit
Year – I
Semester – I
Paper - I

हिन्दी – १
Hindi - 1

Centre for Distance and Online Education

श्रीचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वतीविश्वमहाविद्यालयः

Sri Chandrasekharendra Saraswathi Viswa Mahavidyalaya

Deemed to be University u/s 3 of UGC Act 1956 - Accredited with 'A' grade by NAAC

Enathur, Kanchipuram 631561.

Sponsored and run by Sri Kanchi Kamakoti Peetam Charitable Trust

Chief Editor
Prof. Dr. G. Srinivasu
Vice-Chancellor, SCSVMV

General Editor
Dr. B. Balaji Srinivasan
Director, CDOE

Programme Co-ordinator
Dr. Debajyoti Jena

Additional Co-ordinator
1. Dr. R. Naveen (Academic)
2. Dr. M. Senthil Kumaran (Technical)

Course Co-ordinator
Dr. R. Naveen

Course Writer
Dr. D.Nageswara Rao

Assistants
R.K.Pirakas
S. Vasudevan
S.V. Kalpavalli

© SCSVMV Deemed University, June 2024
All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph any other means, without permission in writing from the below mentioned centre
Further information on the SCSVMV ODL Programmes may be obtained from
Centre for Distance and Online Education (CDOE)
Sri Chandrasekharendra Saraswathi Viswa Mahavidyalaya,
Enathur,Kanchipuram-631561.
Tamil Nadu, India
Phone: 044 – 2726 4301; Mail Id: onlineprograms@kanchiuniv.ac.in ;

शुभाभिनन्दनानि

संसकृतवाङ्मयाध्ययननिरतानां समेषां विद्यार्थिनां श्रीचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती विश्वमहाविद्यालयेन काञ्चीपुरस्थेन सञ्चाल्यमाने दूरविद्याकेन्द्रे भागं ग्रहीतुं सादरं स्वागतम्। विश्वविद्यालयोऽयं राष्ट्रियमूल्याङ्कनप्रत्यायनपरिषदा (NAAC) 'A' श्रेण्यां प्रमाणीकृतः एवं विश्वविद्यालयानुदानायोगेन (UGC) सङ्घटनेन दूरविद्याकेन्द्रत्वेन अनुमतः वर्तते।

विश्वमहाविद्यालयोऽयं १९९३ वर्षे भारतसर्वकारद्वारा प्रकटितः तदारभ्य प्रतिवर्षं विद्याध्यापनक्षेत्रे तथा परिशोधनकार्ये च महतीं समुन्नतिं प्रदर्शयन् वर्धमानः अस्ति। भारतीयपरम्परायां प्राचीनानां ऋषीणां पण्डितानां तथा कवीनां च योगदानं मानवस्य सर्वाङ्गीनविकासाय तथा लोकपरिरक्षणाय च ज्ञानगङ्गां निरन्तरतया प्रवाहयति। नैकानि शास्त्राणि तत्र वर्तन्ते। वेदाः चत्वारः, उपवेदाः, उपनिषदः, षडङ्गाणि, षड्दर्शनानि, अष्टादशपुराणानि, इतिहासौ, धर्मशास्त्रं, काव्यानि, चतुःषष्टिकलाः इत्यादिना ज्ञानपरम्परा अनन्ता सति बहुभ्यः युगेभ्यः लोकस्य मार्गदर्शनं करोति।

प्रकृतेऽस्मिन् काले पाश्चात्यविज्ञानस्य प्रभावेन भारतीय ज्ञानदीपस्य प्रकाशः ह्रासतामेति। आधुनिकविज्ञानद्वारा समाजस्य लाभः विद्यते एव। तथापि अस्मदीयं वाङ्मयं तु न विस्मरणीयं परित्याज्यं च। भारतीयानाम् अनुभवे आचरणे च विद्यामाना योगविद्या प्रपञ्चे सर्वैरपि आद्रियमाना दृश्यते। एवम् आयुर्वेदादयः अपि। अतः अधुनातनविज्ञानेन साकं प्राचीनविज्ञानस्य संयोजनद्वारा प्रपञ्चस्य महानुपयोगः भवति। अनयैव धिया श्रीकाञ्ची कामकोटिपीठाधिपैः प्राचीन-नवीन विद्ययोः संमेलनाय विश्वमहाविद्यालयोऽयं संस्थापितः। तदिदं लक्ष्यम् अग्रे सारयति अध्यापनेन परिशोधनेन च।

श्रीचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती विश्वमहाविद्यालयः स्वीयेप्राङ्गने बहुविधाः विद्याः बोधयन् दूरस्थानां जिज्ञासूनामपि लाभाय केन्द्रमिदं प्रचालयति। एतत् द्वारा विद्यार्थिनः लाभं लभन्तामिति आशास्महे।

Vice chancellor

Sri Chandrasekharendra Saraswati Viswa Mahavidyalaya

Enathur, Kanchipuram

कुलपति की ओर से.

ऑनलाइन एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से हिंदी को एक विषय के रूप में पढने के लिए जिन विद्यार्थियों ने पंजीकृत किया है, उन सभी का कांचीपुरम् स्थित श्री चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती मानित विश्वविद्यालय की ओर से हार्दिक स्वागत है। विश्वविद्यालय राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) - के द्वारा A श्रेणी से प्रमाणित है तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के दूरस्थ शिक्षा केन्द्र की अनुमति प्राप्त है। 1993 में मानित विश्वविद्यालय के रूप में भारत सरकार के द्वारा घोषित किये जाने के पश्चात् विश्वविद्यालय ने उच्च शिक्षा एवं शोधकार्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हासिल की है और आगेच के पथ पर अग्रसर है।

हिंदी भारतीय भाषा-समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है और इसका राष्ट्रीय एकता में महत्वपूर्ण योगदान है। भारत एक विविधताओं और भाषाओं का देश है, जिसमें अनेकता में एकता को साधने के लिए हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। हिंदी भारतीय संविधान की राजभाषा है और इसे राष्ट्रीय भाषा के रूप में भी माना जाता है। यह कहना अत्युक्ति नहीं कि यदि बाकी भारतीय भाषाओं को रंग बिरंगे फूल कहा जाये तो हिंदी वह सूत्र है जो इन फूलों को एक बनाकर रखता है। हिंदी भारतीय संस्कृति की संवाहिका है। इस भाषा को एक तरफ संस्कृत की विरासत प्राप्त है और आधुनिक भारतीय भाषाओं से मैत्री भी। हिंदी एवं अधिकांश भारतीय भाषाओं की शब्दावली की साम्यता इसका प्रबल प्रमाण है।

संख्या की दृष्टि से देखा जाये तो हिंदी भारत की सबसे अधिक संख्या में बोलने और समझनेवाली भाषा है। उत्तर भारत के अधिकांश राज्यों की यह प्रथमभाषा है और दक्षिण, पश्चिमी, पूर्वी भारत में भी द्वितीय तथा तृतीय भाषा के रूप में लोग अपनाते हैं। यह अत्यंत सरल आम भाषा है जिसे करोडों लोग बोलते हैं। हिंदी राष्ट्रीय एकता व सांस्कृतिक सद्भावना की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

हिंदी न केवल भाषा होती है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में भी अहम भूमिका निभाती है। इसके माध्यम से हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देते हैं और भारतीय परंपराओं को समझने में सक्षम हो सकते हैं। इसके साथ ही, विभिन्न क्षेत्रों की लोकप्रिय कथाएँ, गाने और कविताएँ हिंदी में ही अधिक सरलता और गहराई से बयां की जाती हैं।

हिंदी साहित्य अत्यंत समृद्ध एवं विशाल है। हिंदी में तुलसीदास, सूरदास, कबीर, जायसी, रहीम एवं मीराँ का साहित्य है और इसे सांप्रदायिक सद्भावना एवं लोक समन्वय की अद्भुत बानगी की संज्ञा दी जा सकती है। राजनीतिक दृष्टिकोण से भी, हिंदी एक समान स्थान रखती है जो राष्ट्रीय स्तर पर संवाद का माध्यम बनती है। यह न केवल सरकारी कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, बल्कि लोगों को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में सही जानकारी प्राप्त करने में मदद करती है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी, हिंदी एक महत्वपूर्ण भाषा है जो विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से अपनी भाषा में विचार व्यक्त करने में सहायक होती है। यह स्थानीय भाषाओं को समझने और उनकी सम्मान करने में भी मदद करती है, जिससे छात्रों में सांस्कृतिक एवं भाषिक समन्वय स्वाभाविक रूप से संपन्न हो जाता है। हिंदी के अध्ययन से रोजगार के क्षेत्र में भी अनेक मौके हासिल किये जा सकते हैं क्योंकि हिंदी सबसे अधिक जनता के द्वारा बोली और समझी जानेवाली भाषा है।

इस पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा एवं साहित्य से संबंधित उपरोक्त सभी बिंदुओं का समावेश किया गया है और हम आशा करते हैं कि इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से सभी विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।

अस्तु...

हिन्दी - १

Hindi - 1

पाठ्य परिचय

यह पत्र बी.ए. संस्कृत के छात्रों के लिए द्वितीय भाषा हिंदी हेतु निर्मित है। इस पत्र में छात्र हिंदी साहित्य के प्राथमिक विषयों के प्रति ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं एवं हिंदी भाषा की प्राथमिक जानकारी यथा- शब्दस्रोत, व्याकरण इत्यादि का समुपार्जन किया जा सकता है। प्रथम सत्र के इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत हिंदी साहित्य की सभी विधाओं से संबंधित सभी प्रमुख कवियों का सामान्य परिचय दिया गया है और साथ ही साथ यह ध्यान में रखा गया है कि छात्रों की रुचि को हिंदी साहित्य के प्रति बढावा मिले। मध्यकालीन कविता, आधुनिक कविता, गद्य की विधाओं में कहानी, एकांकी, व्यंग्य इत्यादि सभी विधाओं को दृष्टि में रखते हुए छात्रों को हिंदी साहित्य की विधाओं के प्रति भी सही जानकारी दिलाने का प्रयास किया गया है। 'शुद्ध कीजिए' जैसी विविध प्रक्रियाओं के द्वारा यह प्रयास किया गया है कि व्याकरण के विविध अंशों का सही-सही उपयोग हिंदी भाषा के व्यवहार के संदर्भ में कैसे करें। व्याकरण तथा पत्राचार एवं अनुवाद तथा पारिभाषिक शब्दावली का भी सामान्य व्यवहार छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी साबित होगा। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि संस्कृत के विद्यार्थियों के लिए हिंदी का यह पत्र अत्यंत आकर्षक एवं उनके भावी जीवन में रोजगार की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी साबित होगा।

प्रथम खण्ड :

प्रथमखंड के अंतर्गग हिंदी के भक्तिकाल का विवरण दिया जायेगा। भक्तिकाल की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए हिंदी साहित्य के इतिहास पर हल्का प्रकाश डाला जायेगा और भक्तिकाल में दो धाराओं-यथा- सगुण और निर्गुण भक्तिधाराओं की चर्चा करते हुए राम और कृष्ण भक्ति पर विचार किया जायेगा। तुलसीदास एवं रामभक्तिशाखा के अंतर्गत उनके योगदान पर चर्चा करते हुए तुलसीदास के कतिपय दोहों की चर्चा की जायेगी। संदर्भ-प्रतिपदार्थ सहित एवं सप्रसंग व्याख्या के साथ दोहों का सांगोपांग विवरण प्रस्तुत किया जायेगा। तुलसीदास के पश्चात्

भक्तिकाल के लोकप्रिय कवि रहीम के कतिपय दोहों की चर्चा की जायेगी। संदर्भ-प्रतिपदार्थ सहित एवं सप्रसंग व्याख्या के साथ दोहों का सांगोपांग विवरण प्रस्तुत किया जायेगा।

द्वितीय खण्ड :

द्वितीय खंड के अंतर्गग हिंदी साहित्य में आधुनिक काल में रचित कविताओं का परिचय छात्रों को दिया जायेगा। हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में अत्यंत विख्यात कवि आचार्य जयशंकर प्रसाद और सुमित्रानंदन पंत की कविताओं को इस खंड के दौरान छात्र पढेंगे। पाठ्यसामग्री की चर्चा के दौरान द्विवेदी युगीन कविता के पश्चात छायावाद कविता पर स्थूल रूप से परिचय मिलेगा। तत्पश्चात् जयशंकर प्रसाद विरचित "हिमाद्रि से" तथा सुमित्रानंदन पंत की "भारतमाता" कविताओं का विवरण दिया जायेगा। संदर्भ-प्रतिपदार्थ सहित एवं सप्रसंग व्याख्या के साथ इन कविताओं का सांगोपांग विवरण प्रस्तुत किया जायेगा।

तृतीय खण्ड :

तृतीय खंड के अंतर्गग हिंदी साहित्य में आधुनिक काल में रचित गद्य साहित्य का परिचय दिया जायेगा। हिंदी भाषा में खडीबोली साहित्य और आधुनिककाल के आरंभ की चर्चा करते हुए भाषा के प्रामाणीकरण एवं हिंदी के प्राथमिक गद्य का परिचय देते हुए गद्य साहित्य के अंतर्गत 'स्मृति' पाठ को पढाया जायेगा। पंडित श्रीरामशर्मा के परिचय एवं पाठ-साधना के साथ गद्य के स्वरूप को समझने हेतु छात्रों के द्वारा गद्य का पठन किया जायेगा। संदर्भ सहित व्याख्या एवं कठिनशब्दों के अर्थों के साथ पाठ का सारांश प्रस्तुत किया जायेगा।

चतुर्थ खण्ड :

चतुर्थ खंड के अंतर्गग हिंदी साहित्य में आधुनिक काल में रचित गद्य साहित्य का परिचय दिया जायेगा। हिंदी भाषा में कहानी साहित्य के आरंभ एवं हिंदी कहानी की विकासयात्रा का परिचय देते हुए सुदर्शन द्वारा रचित 'संन्यासी' पाठ को पढाया जायेगा। सुदर्शन के परिचय एवं पाठ-साधना के साथ कहानी के स्वरूप को समझने हेतु छात्रों के द्वारा कहानी का खुला पाठ किया जायेगा। संदर्भ सहित व्याख्या एवं कठिनशब्दों के अर्थों के साथ पाठ का सारांश प्रस्तुत किया जायेगा।

पंचम खण्ड :

हिंदी भाषा को समझने और उसके साहित्य के पूर्ण स्वाद प्राप्त करने के लिए भाषा के स्वरूप पर ध्यान देना आवश्यक होगा। हिंदी भाषा की प्राथमिक जानकारी, उस भाषा में शब्द, रूप एवं वाक्य-निर्माण सहित काल विवेचन, लिंग एवं वचन संबंधी ज्ञान तथा कारक आदि प्राथमिक अंशों पर ध्यान दिया जायेगा। व्याकरण के विविध उदाहरणों के द्वारा हिंदी भाषा को पूर्णतः समझने का प्रयास किया जायेगा। इस पत्र में आगे पत्र व्यवहार पर भी उदाहरण सहित बात की जायेगी।

खण्ड	विषय	पृष्ठ संख्या
प्रथम	भक्तिकाल का सामान्य परिचय एवं सगुण भक्तिधारा	12
	कवि तुलसीदास का परिचय	15
	तुलसीदास के दोहे- पाठ	16
	तुलसीदास- लघु प्रश्न	18
	तुलसीदास के दोहे - संदर्भ सहित व्याख्या	21
	कवि रहीम का परिचय	25
	रहीम के दोहे- पाठ	26
	रहीम के दोहे - लघु प्रश्न	28
	रहीम के दोहे- संदर्भ सहित व्याख्या	30
द्वितीय	“हिमाद्रि से” - कवि जयशंकर प्रसाद का परिचय	34
	“हिमाद्रि से” - कविता	36
	“हिमाद्रि से” – लघु प्रश्न	37
	“हिमाद्रि से” कविता की संदर्भ सहित व्याख्या	39
	“हिमाद्रि से” कविता का सारांश	41

	“भारतमाता” के कवि सुमित्रानंदन का परिचय	42
	“भारतमाता” कविता	43
	“भारतमाता” कविता से लघु प्रश्न	44
	“भारतमाता” कविता की संदर्भ सहित व्याख्या	45
	“भारतमाता” कविता का सारांश	48
तृतीय	“स्मृति” कहानीकार पंडित श्रीरामशर्मा का परिचय :	50
	“स्मृति”- कहानी	50
	“स्मृति”- कहानी के लघु प्रश्न	58
	“स्मृति” कहानी की संदर्भ सहित व्याख्या	59
	“स्मृति” का सारांश	61
चतुर्थ	“संन्यासी” कहानीकार सुदर्शन का परिचय	64
	“संन्यासी” कहानी	65
	“संन्यासी” कहानी के लघु प्रश्न	77
	“संन्यासी” कहानी की संदर्भ सहित व्याख्या	78
	“संन्यासी” कहानी का सारांश	80

पंचम	हिंदी भाषा की परंपरा एवं विरासत	82
	हिंदी के शब्दस्त्रोत - परिचय	83
	हिंदी व्याकरण - काल विवेचन	84

प्रथमखण्ड - भक्तिकाल का सामान्य परिचय एवं सगुण भक्तिधारा

भक्तिकाल हिंदी साहित्य का वह अवधारणात्मक काल है जिसमें धार्मिक और भक्तिकाल्पनिक भावनाओं का व्यापक प्रकटन हुआ। सगुण भक्ति धारा हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो धार्मिक और आध्यात्मिक भावनाओं को ईश्वर के साकार स्वरूप के माध्यम से प्रकट करती है। इस धारा का मुख्य उद्देश्य ईश्वर के गुणों, रूप, लीलाओं और उनके साकार स्वरूप के प्रति श्रद्धा और भक्ति को व्यक्त करना है। सगुण भक्ति में भक्त ईश्वर को व्यक्तिगत रूप में, जैसे देवता, आदिपुरुष, या विभिन्न साकार रूपों में पूजता है, और उनकी प्राप्ति के लिए विश्वास रखता है। हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में सगुण एवं साकार रूप की आराधना मुख्यतः दो साकार अवतारों को आधार बनाकर प्रवृत्त हुई थी- राम एवं कृष्ण। सगुण भक्ति का उल्लेख वेदों, उपनिषदों, पुराणों, और भक्ति साहित्य में मिलता है। इस भक्ति की प्रमुख विशेषताओं में स्मरण, पूजा, ध्यान, कीर्तन, और ईश्वर के साकार रूप के प्रति अनुभव और भक्ति में स्थिरता शामिल हैं। सगुण भक्ति धारा ने भारतीय साहित्य के विभिन्न युगों में अपनी अद्वितीय पहचान बनाई है और भक्ति साहित्य के महत्वपूर्ण अंग के रूप में स्थापित की गई है।

इस धारा का प्रमुख उदाहरण है संत कवि लोकमान्य तुलसीदास जी की कृतियाँ, जैसे 'रामचरितमानस', जो राम भगवान की लीलाओं और उनके साकार स्वरूप के प्रति उनकी अद्वितीय भक्ति को व्यक्त करती हैं। तुलसीदास जी ने अपनी रचनाओं में भगवान श्रीरामचंद्र के साकार स्वरूप के सौंदर्य, उस अवतार की महिमा, परब्रह्म स्वरूप में उस अवतार की मंगलमय स्थापना और गुणों की महिमा प्रस्तुत करने के माध्यम से भक्ति के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सगुण भक्ति धारा में दूसरे महान संत-कवि भी शामिल हैं, जैसे सूरदास, मीराबाई, नामदेव, और रहीम जैसे।

सागुण भक्ति के अन्य कवि, जिनका योगदान तुलसीदास के अलावा हिंदी साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है, उन्होंने भक्ति आंदोलन के दौरान अपनी अद्वितीय पहचान बनाई। ये कवि न

केवल साहित्य के क्षेत्र में अपनी रचनाओं से प्रसिद्ध हुए, बल्कि धार्मिक और सामाजिक परिवर्तन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन संत-कवियों ने भी अपनी रचनाओं में भगवान के साकार स्वरूप की महिमा और उनकी भक्ति को प्रस्तुत करते हुए लोकमान्यता प्राप्त की है। पर इन संत कवियों की मौलिक भक्ति के आधार स्वरूप भिन्न भिन्न हैं, जैसे कि मीराँ ने श्रीकृष्ण को आधार बनाकर संकीर्तन किये तो सूरदास ने भगवान कृष्ण को अपने काव्य का आधार बनाया। इस प्रकार, सगुण भक्ति धारा ने हिंदी साहित्य को धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण दिशा प्रदान की है। यह धारा न केवल ईश्वर के साकार स्वरूप के प्रति श्रद्धा को बढ़ावा देती है, बल्कि साहित्य के माध्यम से मानव जीवन में धर्म, नैतिकता, और प्रेम के महत्व को भी स्पष्ट करती है। इस काल में साहित्यिक गतिविधियों में भक्ति और धर्म को प्रधानता दी गई, जिसका प्रमुख उदाहरण है राम काव्य। राम काव्य ने इस काल की विशेषताओं को अपने व्यापक स्वरूप में प्रस्तुत किया, जिसमें रामायण की कथा को भगवान राम के रूप में पूज्यता का विषय बनाया गया।

राम काव्य का महत्वपूर्ण पहलू उसकी भक्तिमयता है। इसमें भगवान श्रीराम के प्रति श्रद्धा और भक्ति के उद्गार प्रकट किये गये है, जो साहित्य को धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से प्रायः देखने के लिए प्रेरणा देते हैं। रामायण के कई प्रसिद्ध कथावाचन इस काव्य में समाहित किए गए हैं, जिनमें सीता हरण, वनवास, लंकापति रावण का वध, और राम-रावण युद्ध के उल्लेख शामिल हैं। ये घटनाएँ न केवल कथा के रूप में प्रस्तुत की गई हैं, बल्कि इनके माध्यम से रामायण के नैतिक और धार्मिक सन्देशों का संवहन भी किया गया है। राम काव्य का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू उसकी भाषा और सौंदर्य है। इस काव्य में सुंदर कविताएँ और गीतों का प्रचुर मात्रा में प्रस्तुतीकरण किया गया है, जिनकी विशेषता उनकी मधुरता और संगीतमयी ध्वनि में है। कवियों ने व्याकरण और छंद का पूर्णतः पालन किया है, जिससे काव्य-सौंदर्य और अद्वितीयता में वृद्धि हुई है।

शिल्प एवं काव्यसौंदर्य के अतिरिक्त, राम काव्य का विशेष लक्षण उसकी सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के प्रति संवेदनशीलता है। इस काव्य में धर्म और नैतिकता को बढ़ावा दिया गया है और समाज की समस्याओं के लिए समाधान प्रस्तुत किया गया है। राम काव्य के

माध्यम से समाज में समानता, न्याय, और सहिष्णुता की महत्वपूर्ण बातें स्पष्ट की गई हैं, जो आज भी हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हैं। स्वयं गोस्वामी तुलसीदास ने अपने समय के समाज में व्याप्त कई असमानताओं तथा सामाजिक विद्वेषों का समाधान अपने काव्य "रामचरित मानस" में खोजने का प्रयास किया है और इस प्रकार, राम काव्य भक्तिकाल का एक महत्वपूर्ण और सुंदर अंग है, जिसने हिंदी साहित्य में एक नया युग और एक नया दृष्टिकोण स्थापित किया। यह काव्य हमें न केवल रामायण की कथा का अनुभव कराता है, बल्कि भक्ति, साहित्यिक सौंदर्य, और समाज के महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार करने के लिए भी प्रेरित करता है।

केशवदास के द्वारा रचित राम चंद्रिका (17वीं सदी) हिंदी साहित्य में सगुण भक्ति के विकास में महत्वपूर्ण ग्रंथ है। भक्ति आंदोलन के दौरान उनके योगदान ने न केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति को समृद्ध किया, बल्कि आध्यात्मिक विचार और सांस्कृतिक प्रथाओं को भी गहरेरूप से प्रभावित किया। केशव दास का सर्वोत्तम काव्य "रसिक प्रिया" माना जाता है, जो कृष्ण और राधा के बीच दिव्य प्रेम का विवेचन करता है। इस काव्य को उसकी बख़ूबी, प्रेम और भक्ति के वर्णन के लिए जाना जाता है, और इसने मिथिला की कविता के शैली में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया। "रसिक प्रिया" में, केशव दास ने न केवल मानव-दिव्य संबंध को एक समीप्त और भावुक ढंग से व्यक्त किया, बल्कि प्यारी भक्ति के माध्यम से भगवान की पहुँचने की साधना को भी मजबूती से दिखाया। उनके कृष्ण को एक प्रेम योग्य, सहज देवता के रूप में चित्रित करने से सगुण भक्ति की इस परंपरा में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। केशव दास का हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में विशेषतः सगुण काव्य पर प्रभाव गहरा है। "रसिक प्रिया" के उनके रचनात्मक शैली, रूपक और भावना से भरे वर्णन ने भक्ति के विषय में एक मानक स्थापित किया। उनके काव्य ने सगुणभक्ति पंथियों और कवियों के लिए एक मार्गदर्शक बनाया। उन्होंने अपने समय में आध्यात्मिक और सांस्कृतिक ताने-बाने में योगदान दिया जिससे भक्ति का अवलोकन और भागवत भक्ति का माध्यम प्रसिद्ध हुआ। इस प्रकार सिद्ध किया जा सकता है कि केशवदास भी रामभक्ति शाखा के उन कवियों

में से एक थे जो गोस्वामी तुलसीदास के अलावा हिंदी सगुण भक्तिकाव्य में रामकाव्य के लिए प्रख्यात रहे।

कवि तुलसीदास का परिचय

गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी में सबसे लोकप्रिय कवि हैं। तुलसीदास की माता का नाम हुलसी, पिता का नाम आत्माराम दुबे और गुरु का नाम नरहरिदास हैं। आप भक्तिकाल में सगुण भक्तिधारा में रामभक्तिशाखा के प्रमुख कवि हैं। 'रामचरित मानस' आपके द्वारा विरचित महाकाव्य है। तुलसीदास के द्वारा विरचित सबसे लोकप्रिय काव्य भी रामचरित मानस ही है। मानस अवधी बोली में लिखित हिन्दी का रामायण है। इस काव्य के नायक भगवान श्रीरामचन्द्र हैं। गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में सगुण भक्तिधारा की रामभक्तिशाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। आप हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं। हिन्दी का रामकाव्य 'रामचरित मानस' आपकी अत्यंत प्रसिद्ध कृति है। आपका जन्म संवत् 1554 में उत्तर प्रदेश के राजापुर नामक गाँव में हुआ था। पिताजी आत्माराम दुबे थे और और माताजी का नाम हुलसी था। आपके गुरुजी नरहरिदास थे । तुलसीदास पहले भोग-विलासी एवं मोह में लिप्त थे किन्तु पत्नी रत्नावली के कारण उनका ज्ञानोदय हुआ। आप श्रीरामचन्द्र के महाभक्त बन गये। 'रामचरित मानस' अवधी में रचित महाकाव्य है। 'दोहावली', 'कवितावली', 'गीतावली', 'जानकी मंगल', 'पार्वती मंगल' आदि आपके अन्य काव्य हैं। आपकी भाषा अवधी और ब्रज हैं। संवत् 1670 में आपका स्वर्गवास हो गया।

1. तुलसीदास के दोहे

1) एक भरोसो एक बल, एक आस विश्वास ।
एक राम घनश्याम हित, चातक तुलसीदास ।।

2) राम नाम मनि दीप धरूं जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतरु बाहरौ जो चाहसि उजियार ।।

3) तुलसी मीठे वचन तें सुख उपजत चहुँ ओर ।
बसीकरन यह मंत्र है, परिहरु वचन कठोर ।।

4) आवत ही हरषै नहीं नयननु नहीं सनेह ।
तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरसै मेह ।।

5) मुखिया मुख सों चाहिए, खान पान को एक ।
पालहि पोसहि सकल अंग तुलसी सहित विवेक ।।

6) उत्तम मध्यम नीच गति पाहन सिकता पानी ।
प्रीति परिच्छा तिहुन की, बैर बितिक्रम जानी ।।

7) जग तें रह छत्तीस ह्वै, राम चरन छः तीन ।
तुलसी देखु विचारु हिय, है यह मतौ प्रवीन ।।

8) मन्त्री गुरु अरु वैद्य जो, प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज, धर्म, तन तीन कर होइ बेगिहि नास ।।

9) मनि मानिक महँगे किए, सहँगे तन जल-नाज ।
तुलसी एते जानिए, राम गरीब नेवाज ||

10) का भाषा का समसकृत, प्रेम चाहिए साँच |
काम जु आवै कामरी, का ले करिअ कुमाच ।।

लघु प्रश्न

1. गोस्वामी तुलसीदास का लघु परिचय दीजिए?

उत्तर: गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी में सबसे लोकप्रिय कवि हैं। आप भक्तिकाल में रामभक्तिशाखा के प्रमुख कवि हैं।

2. गोस्वामी तुलसीदास विरचित महाकाव्य क्या है?

उत्तर: 'रामचरित मानस' गोस्वामी तुलसीदास के द्वारा विरचित महाकाव्य है।

3. 'रामचरित मानस' की भाषा क्या है?

उत्तर: तुलसीदास के द्वारा विरचित सबसे लोकप्रिय माला रामचरित मानस है। मानस अवधी बोली में लिखित हिन्दी का रामायण है। इस काव्य के नायक भगवान श्रीरामचन्द्र हैं।

4. तुलसीदास के माता-पिता और गुरु के नाम लिखिए ?

उत्तर: तुलसीदास की माता काल तुलसी, पिता का नाम आत्माराम दुबे और गुरु का नाम नरहरिदास है।

5. गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार मुखिया को कैसे होना चाहिए ?

उत्तर: तुलसीदास के अनुसार मुखिया को मुख के समान रहना चाहिए। मुख एक तरफ से अन्न पान ग्रहण करता है । लेकिन शरीर के सभी अंगों का एक समान पोषण करता है।- राजा को भी राज्य में सभी जनों से समान व्यवहार करना चाहिए।

6. गोस्वामी तुलसीदास स्वयं को 'चातक' क्यों कहते हैं ?

उत्तर: गोस्वामी तुलसीदास भगवान श्रीरामचन्द्र के परमभक्त हैं। उन्होंने श्रीराम को 'स्वाति सलिल अर्थात् और स्वयं को 'चातक' माना। क्योंकि तुलसीदास जी मात्र श्रीरामचन्द्र के लिए ही जीते हैं। इस प्रवृत्ति को अनन्य भक्ति कहते हैं।

7. गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार मित्रों के कितने भेद हैं?

उत्तरः गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार मित्रों के तीन भेद हैं। उत्तम क़ी दोस्ती पत्थर की लकीर के समान, मध्यम की दोस्ती रेत की लकीर के समान और अधम की मित्रता पानी की लकीर के समान होती हैं।

8. तुलसीदास ने राम नाम की महिमा का वर्णन कैसे किया?

उत्तरः तुलसीदास के अनुसार राम नाम मणिदीपक के समान है। यदि उस मणि दीपक को - जीभ की देहली पर रखेंगें तो बाहर और भीतर प्रकाश होगा। अर्थात् भौतिक सुख और

9. तुलसीदास श्रीरामचन्द्र को 'गरीब नेवाज' क्यों कहते है?

उत्तरः तुलसीदास के अनुसार श्रीरामचन्द्र ने अनाज, दानापा-नी आदि को सस्ता बनाया। मणिमाणिक्य -, हीरे मोती इत्यादि को महंगा बनाया जो आदमी के लिए उतना आवश्यक नहीं। इसलिए श्रीराम 'गरीब नेवाज' हैं।

10. तुलसीदास के अनुसार हमें कहाँ जाना उचित नहीं?

उत्तरः तुलसीदास के अनुसार हमें वहाँ नहीं जाना चाहिए, जहाँ हमारा आदर नहीं होगा और हगारे आगमन से लोग खुश न हों। वहाँ यदि बादल सोना भी क्यों न बरसायें हमें जाना नहीं चाहिए।

11. मीठे वचनों का महत्व क्या हैं?

उत्तरः मीठे वचनों से, हमारे चारों ओर आनंक होगा। मीठे वचन से हम लोगों को वश में वार सकते हैं। अतः कठोर वचन बोलने नहीं चाहिए।

12. तुलसी के अनुसार हमें जगत के प्रति कैसे रहना चाहिए और क्यों?

    उत्तरः तुलसी के अनुसार हमें जगत के प्रति छत्ती (३६) बनकर रहना चाहिए। अर्थात् जगत् से विमुख रहना चाहिए क्योंकि जगत् मिथ्या है।

13. तुलसी के अनुसार हमें श्रीरामचन्द्र के प्रति है रहना चाहिए और क्यों?

    उत्तरः तुलसी के अनुसार हमें भगवान श्रीरामचन्द्र प्रति 'छः - तीन' (६३) बनकर रहना चाहिए अर्थात् श्रीरामचन्द्र के साथ सदा जुड़कर रहें क्योंकि श्रीरामचन्द्र परब्रह्म और शाश्वत हैं।

संदर्भ सहित व्याख्या

उत्तम मध्यम नीच गति पाहन सिकता पानी।
प्रीत परिच्छा तिहुन की बैर बितिक्रम जानी।।

सन्दर्भ

यह दोहा गोस्वामी तुलसीदास के द्वारा विरचित है। गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी में सबसे विख्यात कवि हैं। आप भक्तिकाल में रामभक्तिशाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। रामचरित मानस"' आपके द्वारा विरचित महाकाव्य है।

व्याख्या

गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार मित्रों के तीन भेद हैं। उत्तम क़ी दोस्ती पत्थर की लकीर के समान, मध्यम की दोस्ती रेत की लकीर के समान और अधम की मित्रता पानी की लकीर के समान होती हैं।

विशेषता

तुलसीदास छोटे से और सरल उदाहरण देकर एक बड़ा संदेश संप्रेषित करते हैं। यह भक्तकवियों की विशेषता है, क्योंकि उनका संदेश सामान्यजनों के लिए है।

मणिमानिक महंगे किये, सहंगे तृन जल नाज।

तुलसी ये ते जानिये, राम गरीब नेवाज।।

सन्दर्भ

यह दोहा गोस्वामी तुलसीदास के द्वारा विरचित है। गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी में सबसे विख्यात कवि हैं। आप भक्तिकाल में रामभक्तिशाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। रामचरित मानस"' आपके द्वारा विरचित महाकाव्य है।

व्याख्या

तुलसीदास के अनुसार श्रीरामचन्द्र ने अनाज, दानापानि-, आदि को सस्ता बनाया। मणिमाणिक्य, हीरे आदि को महंगा बनाया जो आदमी के लिए उतना आवश्यक नहीं। इसलिए श्रीराम 'गरीब नेवाज' हैं।

विशेषता

तुलसी श्रीरामचन्द्र के परम भक्त हैं। इसलिए वे श्रीरामचन्द्र को सृष्टिकर्ता मानते हैं।

मंत्री गुरु अरु वैद्य जो प्रियबोलहिं भय आस।

राज धर्म तन तीन करिं होइ बेगिहिं नास।।

संदर्भ

यह दोहा गोस्वामी तुलसीदास के द्वारा विरचित है। गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी में सबसे लोकप्रिय कवि हैं। आप भक्तिकाल में रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं। 'रामचरित मानस आपके द्वारा विरचित महाकाव्य है।

व्याख्या

तुलसी के अनुसार समाज में मन्त्री, गुरु, और वैद्य का महत्वपूर्ण स्थान है। मन्त्री हमेशा राजा की प्रशंसा करता रहे यानी ठकुरसुहाती करता रहे तो राजा का, गुरु भयभीत होगा तो धर्म का और वैद्य की दुराशा के कारण शरीर का तुरंत नाश होगा। इसलिए इन तीनों को बहुत सावधान रहना चाहिए।

विशेषता

इस दोहे में तुलसी ने समाज के लिए आचरणीय संदेश दिया। यह दोहा 'रामचरित मानस' से संकलित है।

का भासा का समसकृत प्रेम चाहिए साँच।
काम जु आवै कामरी, का लै करिअ कुमाच।।

संदर्भ

यह दोहा गोस्वामी तुलसीदास के द्वारा विरचित है। गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी में सवसे लोकप्रिय कवि हैं। आप भक्तिकाल में रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं।' रामचरित मानस आपके द्वारा विरचित महाकाय है। उनके दोहे मात्र भक्ति के ही नहीं, उपदेश एवं सामाजिक सामंजस्य के लिए भी प्रसिद्ध हैं।

व्याख्या

तुलसी के अनुसार कवि के मन में भगवान के प्रति प्रेमभाव की आवश्यकता है, भाषा की नहीं। जहाँ कम्बल से काम चलता हो, वहाँ दुशाला लेकर क्या करना?

विशेषता

तुलसी ने सामान्य जनता की भाषा का समर्थन किया। उन्होंने रामायण की रचना सामान्य जन की बोली अवधी में की थी । लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि वे संस्कृत नहीं जानते अथवा संस्कृत के खिलाफ थे। मात्र काव्य-प्रयोजन के संप्रेषण की दृष्टि से उन्होंने 'भाषा' को चुना।

जग तें रह छत्तीस ह्वै, रामचरन छः तीन।

तुलसी देखु बिचारु हिय, है यह मतौ प्रवीन।।

संदर्भ

यह दोहा गोस्वामी तुलसीदास के द्वारा विरचित हैं। गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी में सबसे लोकप्रिय कवि हैं । आप भक्तिकाल में रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं। 'रामचरित मानस' आपके द्वारा विरचित महाकाव्य है।

व्याख्या

तुलसी के अनुसार हमें भगवान श्रीरामचन्द्र के प्रति 'यहतीन-' (६३ बनवार रहना चाहिए। (अर्थात् श्रीरामचन्द्र के साथ जुड़वार रहें। क्योंकि श्रीरामचन्द्र परब्रह्म और शाखत है। हमें जगत् बनकर रहना चाहिए। अर्थात् जगत् से विमुख रहना चाहिए। क्योंकि जगत् (३६) के प्रति छत्तीस मिथ्या है।

विशेषता

तुलसी के अनुसार हमें जगत् के प्रति छत्तीस बनकर रहना चाहिए । अर्थात् जगत् से विमुख (३६) रहना चाहिए। क्योंकिदुनिया नश्वर एवं माया से भरी है। हमें भगवान श्रीरामचन्द्र के प्रति 'छः-तीन' (६३बनकर रहना चाहिए। अर्थात् श्रीरामचन्द्र वो साथ जुड़कर रहना चाहिए। क्य (ोंकि श्रीरामचन्द्र परब्रहम और शाखत है। तुलसीदास श्रीरामचन्द्र के परमभक्त हैं इसलिए वे जगत को नकारते हैं और श्रीरामचन्द्र का गुणगान करते हैं।

रहीम

कवि रहीम का परिचय

रहीम का हिन्दी साहित्य में अत्यंत विशिष्ट स्थान है। आप हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के कवि थे। आपका जन्म सन् 1556 ई. में लाहौर में हुआ था। आपका पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। बैराम खाँ के पुत्र थे। अकबर के दरबार में आप सेनापति तथा मन्त्री रह चुके थे। रहीम बहुमुखी प्रतिभासंपन्न कवि थे। आप संस्कृत, अरबी, फारसी, हिन्दी तथा तुर्की भाषाओं के विद्वान थे। 'रहीम सतसई', 'शृंगार सतसई', 'बरवै नायिका भेद', 'खेट कौतुकम्' इत्यादि आपके प्रसिद्ध काव्य हैं। आपके दोहों में गहरे अनुभव, ज्ञान, नीति तथा भाषा का चमत्कार आदि देखने को मिलते हैं। महाकवि तुलसीदास के साथ आपका मैत्रीपूर्ण संबंध था।

रहीम के दोहे हिन्दी साहित्य की धरोहर हैं। इनमें नीति, दान की महिमा, आत्मसम्मान आदि की चर्चा मिलती है। रहीम की विशेषता परधर्म सहिष्णुता थी । यद्यपि आप मुसलमान थे, तथापि हिन्दू पुराणों तथा शास्त्रों का अच्छा ज्ञान रखते थे। संस्कृत साहित्य एवं आर्ष वाङ्मय का भी आपने अच्छा अध्ययन किया और इस विषय का प्रमाण, रहीम के द्वारा विरचित संस्कृत साहित्य ही है। 'गंगाष्टकम्' जैसी संस्कृत रचनाएँ रहीम के संस्कृत ज्ञान के उदाहरण हैं। आपने अरबी, फारसी एवं तुर्की शैली से संस्कृत शैली को मिलाकर एक ग्रंथ की रचना की थी जो कि 'मणिप्रवाल' शैली का सुंदर नमूना है।

रहीम अपने समय के महादाता थे। कहा जाता है कि उन्होंने 'गंग' कवि को एक एक अक्षर के लिए एक एक लाख रूपया दान में दिया था। पर इसी दान गुण के कारण वे अपने अंतिम समय में बहुत गरीब बन गये और अत्यंत दीन अवस्था में उनका जीवन समाप्त हो गया।

रहीम के दोहे

1. रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून ।
पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष चून ।।

2. रहिमन विद्या बुद्धि नहीं, नहीं धरम, जस, दान।
भू पर जनमु वृथा धरै, पशु बिन पूँछ विषान ।।

3. जो रहीम उत्तम प्रकृति का कर सकत कुसंग |
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ।।

4. माँगे घटत रहीम पद, कितौ करौ बढ़ि काम ।
तीन पैर बसुधा करि, तऊ बावनै नाम।।

5. तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहिं न पान ।
कहि रहीम परकाज हित, संपति संचहि सुजान ।।

6. टूटै सुजन मनाइए, जो टूटै सउ बार ।
रहिमन फिरि फिरि पोइए, टैटै मुक्ताहार ।। । ।

7. रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो छिटकाय ।
टूटे से पुनि न जुरै, जुरै गाँठि पड़ि जाय ।।

8. जो रहीम ओछो बढ़े, तो अति ही इतराय ।
प्यादे से फरजी भयौ, टेढ़ो - टेढ़ो जाय ।।

9. एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय।।

10. रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि ।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि ।।

लघु प्रश्न

1) रहीम का संक्षिप्त परिचय दिजिए ?

उत्तर रहीम का पूरा नाम अब्दुल रहीम खानखाना था। आप हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल के, कवि हैं। आप अकबर के दरबार में रहते थे।

2) कलम और तलवार के धनी कौन है?

उत्तरः कलम और तलवार और तलवार के धनी रलीम थे। आप संस्कृत, ब्रज, फारसी, और आरबी भाषाओं के विद्वान ही नहीं, अपितु अकबर के सेनापति भी थे। आपने अनेक युद्धों में, अकबर का साथ दिया।

3) रहीम, किसके दरबार में रहते थे?

उत्तर रहीम अकबर के दरबार में रहते थे आप कई भाषाओं के विद्वान - कवि और सेनापति थे। "रहीम सतसई' आपकी प्रसिद्ध रचना है। आप अकबर के 'नवरलों' में एक थे।

4) रहीम के द्वारा विरंचित प्रसिद्ध ग्रन्थ कौन या है?

उत्तरः रहीम के द्वारा विरचित प्रसिद्ध ग्रन्थ रहीम सतसई' है। आपने संस्कृत में भी कई रचनाएँ की थीं। भारतीय सच्ची संस्कृति के आप प्रतिनिधि थे।

4) रहीम के अनुसार 'पानी' के कितने अर्थ हैं और वे क्या हैं?

उत्तरः रहीम के अनुसार पानी के ३ (तीन) अर्थ हैं। वें (1) जल (2) चमक (3) सम्मान

5) रहीम के अनुसार सज्जन को छोड़ना क्यों नहीं चाहिए?

उत्तर- रहीम के अनुसार सज्जन का मिलन दुर्लभ है। इस दुनिया में सज्जन बहुत विश्ले होते हैं। इसलिए संज्जन को छोड़ना नहीं चाहिए।

6) सज्जन लोगों का स्वभाव कैसा होता है?

उत्तर - रहीम के अनुसार सज्जन लोगों का स्वभाव परोपकारी होता है। वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते। सरोवर अपना पानी खुद नहीं पीता। उसी प्रकार सज्जन लोग भी दूसरों के लिए ही संपत्ति इकठ्ठा करते हैं।

7) उत्तम प्रकृति के लोगों का वर्णन रहीम ने किया?

उत्तर - रहीम ने उत्तम प्रकृति के लोगों का वर्णन चंदन वृक्ष के माध्यम से किया। चंदन सदा विषधर साँपों के संग में रहता है। किन्तु साँप का प्रभाव उस पर नहीं होता। उसी प्रकार उत्तम प्रकृति के लोग भी बुरे मित्रों के कारण अपना गुण नहीं छोड़ते।

9) रहीम के अनुसार प्रेम का रिश्ता क्यों तोडना नहीं चाहिए?

उत्तर- रहीम के अनुसार मानव संबंध बहुत नाजुक होते हैं। स्वभावतः एक बार वे टूट जाते हैं तो पूर्वस्नेह को पुनः स्थापित करना अत्यंत कठिन है। अतः हमें मानव रिश्तों के संबंध में अत्यंत जागरूकता से व्यवहार करना चाहिए।

10) एक मात्र विषय पर ध्यान देने का संदेश रहीम ने किस प्रकार दिया?

उत्तर- लोक व्यवहार हो अथवा अन्य, हमें एक समय में एक ही विषय पर ध्यान केंद्रित करके कार्य करना चाहिए। उससे कार्य की सिद्धि होगी और अन्यान्य कार्य भी अपने आप सिद्ध हो जायेंगे। उदाहरण के लिए उन्होंने वृक्ष के मूल मात्र को जल से सींचने की बात कही थी।

संदर्भ सहित व्याख्या :

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून ।
पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष चून ।।

संदर्भ :

रहीम का पूरा नाम अब्दुल रहीम खाना है। आप भक्तिकाल के कवि हैं। कहा जाता है कि आप तुलसीदास के मित्र थे। आप अकबर के दरबार में रहते थे। कलम और तलवार के धनी रहीम थे। आप संस्कृत, ब्रज, फारसी और अरबी भाषाओं के विद्वान ही नहीं, अपितु अकबर के सेनापति भी थे। आपने अनेक युद्धों में अकबर का साथ दिया। "रहीम सतसई' आपकी प्रसिद्ध रचना है। आप अकबर के नवरत्नों' में एक थे। आपने 'मदनाष्टक' 'रास पंचाध्यायी' सहित संस्कृत में भी रचनाएँ की थीं। 'गंगाष्टकम्' इसका उदाहरण है।

व्याख्या :

रहीम के अनुसार पानी तीन के संदर्भ में अत्यंत आवश्यक हैं और पानी के बिना इन तीनों के लिए कोई मूल्य नहीं रह जायेगा। पानी नहीं है तो मोती, मनुष्य और चूने के लिए कोई मूल्य नहीं है।

विशेषता :

रहीम के अनुसार पानी के ३ (तीन) अर्थ हैं। वें (1) चमक (2) सम्मान (3) जल। इन तीनों अर्थों को क्रमशः तीन- यानी मोती, मनुष्य एवं चूने के साथ मिलाकर देखने पर दोहे की सार्थकता सिद्ध होती है। इस दोहे में श्लेष अलंकार का प्रयोग है।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोडो छिटकाय ।
टूटै से पुनि ना जुरै, जुरै गांठ पडि जाय ।।

संदर्भ :

उपर्युक्त दोहे में रहीम के संदर्भ को पढें।

व्याख्या :

रहीम के अनुसार मानव संबंध कच्चे धागों के समान हैं। यदि धागा ध्यान से पाला नहीं जाये तो वह टूट जायेगा और उसे फिर से जोड़ना बहुत कठिन हो जायेगा। यदि जुड भी जाये, तो गांठ बनी रहती है। अर्थात् यदि रिश्ता टुट गया तो जोड़ना बहुत कठिन है और यदि रिश्ते को कुछ करके जोड भी दिया जाये, किंतु उसमें पूर्ववत् का स्नेह बने रहना कठिन है। अतः यही श्रेयस्कर होगा कि धागे को टूटने से बचाकर रखें और रिश्तों को भी सावधानीपूर्वक संभालें।

विशेषता: इस दोहे में रहीम ने मानव संबंधों की चर्चा की। मध्ययुगीन कवि रहीम ने सामाजिक समस्याओं को किसप्रकार देखा, यह भी द्रष्टव्य है। रहीम का लोकानुभव इस दोहे में स्पष्ट हो रहा है।

रहिमन देखि बडेन को, लघु न दीजिए डारि ।
जहाँ काम आवै सुई, कहाँ करै तरवारि ।।

संदर्भ :

उपर्युक्त दोहे में रहीम के संदर्भ को पढें।

व्याख्या :

कवि रहीम के अनुसार बडे और छोटे का अंतर देखना ठीक नहीं है। बडों को ही उन्नत समझकर छोटों की उपेक्षा न की जाये। सबका अपना अपना महत्व होता है। उदाहरण के लिए किसी सुई से जो काम बन पडे, वह बडी तलवार से नहीं होगा।

विशेषता: इस दोहे में रहीम ने मानव संबंधों की चर्चा की। रहीम का लोकानुभव इस दोहे में स्पष्ट हो रहा है। रहीम ने इस दोहे में सर्वजन समभावना एवं सामाजिक सद्भावना पर प्रकाश डाला है।

टूटे सुजन मनाइए, जो टूटै सउ बार ।
रहिमन फिरि फिरि पोइए, टूटे मुक्ताहार ।।

संदर्भ :

उपर्युक्त दोहे में रहीम के संदर्भ को पढें।

व्याख्या : रहीम के अनुसार सज्जन का मिलना दुलर्भ है। सुजान अथवा सुजन इस दुनिया में बहुत विरले होते हैं। इसलिए हर हालत सज्जन को थोड़ना नहीं बल्कि उसके साथ संपर्क को बनाये रखना चाहिए। समझ लीजिए कि हमारे द्वारा किसी मोतियों का हार तोडा गया तो हम क्या उसको वैसे ही रहने देंगे? नहीं.. हम बिखर गये मोतियों को चुन-चुनकर इकट्ठा करते हैं और फिर उन सभी को एक माला के रूप में पिरोते हैं। जिस प्रकार हम टुटे मोतिहार को बार-बार पिरोते हैं, उसी प्रकार हम से दूर होते सज्जन को भी बार- बार मनाना चाहिए।

विशेषता: इस दोहे में रहीम ने मानव संबंधों की चर्चा की। रहीम का लोकानुभव इस दोहे में स्पष्ट हो रहा है। सज्जन एवं मोतियों की तुलना अत्यंत सार्थक बन पडी है।

एकै साधै सब सधै, सब साधै सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फले अघाय ।।

संदर्भ :

उपर्युक्त दोहे में रहीम के संदर्भ को पढें।

व्याख्या : रहीम के अनुसार मनुष्य को सिर्फ एक विषय में साधना करनी चाहिए, यदि एक विषय में साधना करें तो, बाकी सब अपने आप हस्तगत होते जायेंगे। लेकिन सभी काम एक साथ करने से सब बरबाद हो जायेंगे। वृक्ष के मूल को सींचना चाहिए बाकी फूल-फल वगैरा अपने आप उग जायेंगे।

विशेषता : रहीम ने इस दोहे में एकाग्रता का संदेश दिया । यह दोहा छात्रों के लिए अत्यंत उपयुक्त है जो कि साधना के बारे में उपदेश देता है कि यदि किसी कार्य की सिद्धि हो तो एक ही विषय पर दृष्टि डाले। यदि छात्र ऐसा नहीं कर सकेंगे तो उनकी एकाग्रचित्तता खण्डित हो जायेगी।

द्वितीय खण्ड

हिमाद्रि से

कवि जयशंकर प्रसाद का परिचय

प्रस्तुत कविता के कवि आचार्य जयशंकर प्रसाद जी हैं। आप आधुनिक हिन्दी साहित्य में छायावाद युग के चार प्रतिनिधि कवियों में प्रमुख हैं। आपका जन्म 1881 ई. में काशी के एक संभ्रान्त वैश्य परिवार में हुआ था। आपके परिवार को 'सुंघनी साहू' नाम से जाना जाता था। उनके पिता श्री देवीप्रसाद साहू बडे काव्य प्रेमी थे। पिता और बड़े भाई की अकाल मृत्यु के कारण घर का दायित्व प्रसाद जी पर आ पड़ा। अतः आपने दूकान संभालते हुए घर पर ही हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी भाषाओं का गहन अध्ययन किया था। फिर भारतीय दर्शन, उपनिषद, पुराण- साहित्य का गंभीर अध्ययन किया था। पुरातत्व और इतिहास आपके प्रिय विषय रहे।

प्रसाद जी हिन्दी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न कलाकार हैं। आप कुशल कहानीकार, उच्च कोटि के नाटककार, भव्य उपन्यासों के स्रष्टा एवं अद्‌भुत प्रतिभायुक्त कवि थे । 'कानन- कुसुम', 'प्रेम पथिक', 'करुणालय', 'झरना', 'आँसू', 'लहर', 'कामायिनी' आपके प्रमुख काव्य हैं। 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त', 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'राजश्री', 'अजातशत्रु', 'ध्रुवस्वामिनी' आपके अत्यंत प्रसिद्ध नाटक हैं। आपने लगभग 60 कहानियाँ भी लिखीं।

प्रस्तुत पाठ 'हिमाद्रि से' उनके द्वारा लिखित ऐतिहासिक नाटक 'चंद्रगुप्त' से संकलित है। प्राचीन भारत के विशाल विस्तार में, जहाँ साम्राज्य समुद्र के ज्वार की तरह उठते और गिरते थे, वहाँ एक दूरदर्शी सम्राट रहता था जिसका नाम इतिहास के इतिहास में गूंजता है - चंद्रगुप्त मौर्य। उनकी कहानी, जयशंकर प्रसाद के चिरस्मरणीय नाटक "चंद्रगुप्त" में अमर है, एक बढ़ते राष्ट्र की पृष्ठभूमि में महत्वाकांक्षा, प्रेम, विश्वासघात और विजय के धागों को एक साथ बुनती है।

यह नाटक शक्तिशाली मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलीपुत्र के विशाल शहर में सामने आता है। चंद्रगुप्त, एक युवा और उत्साही राजकुमार, सिंहासन का उत्तराधिकारी है लेकिन अपने भाग्य से अनजान है। उनके शुरुआती वर्षों में उन्हें एक शानदार रणनीतिकार और दार्शनिक, चाणक्य की निगरानी में संरक्षण मिला, जिनकी भारत के एकीकरण की प्यास महानता के लिए चंद्रगुप्त की अपनी इच्छा से मेल खाती है। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, हम चंद्रगुप्त को एक आवेगी राजकुमार से एक दुर्जेय नेता में बदलते हुए देखते हैं। प्रतिद्वंद्वी राज्यों के साथ उनकी मुठभेड़ों और आंतरिक असंतोष से शासन की जटिलताओं और सत्ता द्वारा मांगे गए बलिदानों का पता चलता है। जीती गई लड़ाइयों और बनाए गए गठबंधनों के माध्यम से, चंद्रगुप्त को जिम्मेदारी का महत्व पता चलता है जो एक साम्राज्य पर शासन करने के साथ आती है।

राजनीतिक उथल-पुथल के बीच, चंद्रगुप्त की व्यक्तिगत यात्रा मगध की राजकुमारी अलका अथवा दुर्धरा के प्रति उनके प्रेम से जुड़ी हुई है। चुनौतियों और साज़िशों से भरी उनकी प्रेम कहानी, विजय के शोर के बीच मानव हृदय की एक मार्मिक याद दिलाने का काम करती है। दुर्धरा का अटूट समर्थन और ज्ञान चंद्रगुप्त के विकास का अभिन्न अंग बन गया, भले ही भाग्य उनके बंधन का परीक्षण करने की साजिश रच रहा हो।

मगध की विजय और चंद्रगुप्त के दूरदर्शी शासन के तहत मौर्य साम्राज्य की स्थापना के साथ नाटक अपने चरम पर पहुंचता है। उनका राज्याभिषेक न केवल व्यक्तिगत खोज की परिणति का प्रतीक है, बल्कि भारत के लिए एक नए युग की शुरुआत का भी प्रतीक है। फिर भी, उल्लास के बीच, परछाइयाँ मंडराती रहती हैं क्योंकि चंद्रगुप्त सत्ता की कीमत और गौरव के पथ पर किए गए बलिदानों का सामना करता है।

जयशंकर प्रसाद की "चंद्रगुप्त" अपनी ऐतिहासिक कथा से परे, नेतृत्व के सार, विचारधाराओं के टकराव और कर्तव्य और इच्छा के बीच शाश्वत संघर्ष को उजागर करती है। यह प्राचीन भारत का एक ज्वलंत चित्र प्रस्तुत करता है, जहां सम्मान और विश्वासघात साथ-साथ चलते हैं, और जहां राष्ट्रों का भाग्य कुछ लोगों के निर्णयों पर निर्भर करता है। चंद्रगुप्त अकेले खड़े हैं, गर्व और उदासी के मिश्रण के साथ अपने साम्राज्य को देख रहे हैं। प्रसाद के कालजयी नाटक में अमर उनकी यात्रा,

मानवीय महत्वाकांक्षा की अदम्य भावना और उन लोगों की स्थायी विरासत के प्रमाण के रूप में कार्य करती है जो इतिहास के पाठ्यक्रम को आकार देने का साहस करते हैं।

प्रस्तुत कविता 'हिमाद्रि से' उसी नाटक से संकलित है जिसे अलका, भारतीय सेना को प्रेरित करने के उद्देश्य से गाती है। सेल्यूकस की सेना से भारतीय सेना की भिडन्त इतिहास में कहीं दब गयी है। 'चंद्रगुप्त' नाटक उसका स्मरण दिलानेवाला है।

"हिमाद्रि से"

हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती,

स्वयंप्रभा समुज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती ।

अमर्त्य वीरपुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,

प्रशस्त पुण्यपंथ है बढ़े चलो बढ़े चलो।।

असंख्य कीर्ति रश्मियाँ विकीर्ण दिव्यदाह सी,

सपूत मातृभूमि के रूको न शूर साहसी ।

अराति सैन्य सिंधु में सुवाड़वाग्नि- से प्रवीर हो,

जयी बनो बढ़े चलो बढ़े चलो ।।

लघु प्रश्न

1) 'हिमादि से' कविता के कवि कौन हैं? उनकी विशिष्टता क्या है?

उत्तर : 'हिमाद्रि से' कविता के कवि श्री जयशंकर प्रसाद हैं। आप हिंदी में ' छायावाद' के प्रमुख कवि हैं। 'कामायनी' आपका सबसे प्रसिद्ध काव्य है। प्रसाद जी कवि ही नहीं, अपितु नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार और निबंधकार भी हैं।

2) जयशंकर प्रसाद हिंदी में किस वाद के कवि हैं?

उ) जयशंकर प्रसाद हिंदी में छायावाद के कवि हैं।

3) जयशंकर प्रसाद किस प्रदेश के थे?

उ) जयशंकर प्रसाद बनारस के रहनेवाले थे ।

4) जयशंकर प्रसाद हिंदी में किस काल के कवि हैं?

उ) जयशंकर प्रसाद हिंदी में आधुनिक काल के कवि हैं।

5) 'हिमाद्रि से' कविता किस नाटक से संकलित है?

उ) 'हिमाद्रि से' कविता 'चन्द्रगुप्त' नाटक से संकलित है।

6) हिमाद्रि से कौन पुकार रही है?

उ) हिमाद्रि से भारतमाता पुकार रही है।

7) भारती का रूप कैसा है?

उ) भारती स्वयं जाग्रत है और वह अत्यंत स्वच्छ व निर्मल है।

8) इस कविता में 'अराति' का क्या अर्थ है?

उ) इस कविता में 'अराति' का अर्थ है- शत्रु अथवा दुश्मन।

9) 'हिमाद्रि से' गीत चंद्रगुप्त नाटक में कौन गा रहा है?

उ) 'हिमाद्रि से' गीत चंद्रगुप्त नाटक में अलका गा रही है।

10) 'हिमाद्रि से' कविता का संबंध किस राजवंश से है?

उ) हिमाद्रि से कविता का संबंध गुप्त राजवंश के साथ है।

11) हिमादि' के ऊंचे शिखर से कौन पुकार रही हैं और क्यों ?

उ) 'हिमाद्रि' के ऊंचे शिखर से भारतमाता, पुकार रही हैं। वह शुद्ध, प्रबुद्ध और निर्मल है। वह अपनी जनता में स्वतन्त्रता की चेतना लाने पुकार रही हैं।

संदर्भ सहित व्याख्या :

हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती,

स्वयंप्रभा समुज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती ।

अमर्त्य वीरपुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,

प्रशस्त पुण्यपंथ है बढ़े चलो बढ़े चलो।।

संदर्भ :

यह कवितांश 'हिमाद्रि से' नामक पाठ से संकलित है। यह 'चन्द्रगुप्त' 'नाटक में एक गीत है। इसके रचइता आचार्य जयशंकर प्रसाद हैं। आप हिन्दी में छायावाद' के प्रमुख कवि हैं। 'कामायनी' आपका सबसे प्रसिद्ध काव्य है। प्रसाद जी कवि ही नहीं, अपितु नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार और निबंधकार भी रहे थे।

व्याख्या :

हिमालय के ऊंचे शिखर से भारतमाता अपने पुत्रों को पुकार रही हैं। वह शुद्ध, प्रबुद्ध और निर्मल है। वह अपनी जनता में स्वतन्त्रता की चेतना लाने के उद्देश्य से कहती है- 'हे पुत्रो! तुम सब अमर के वीरपुत्र हो। तुम अपने मन में यह दृढ प्रण स्वीकार कर लो कि आज हम अपने राष्ट्र को विदेशियों से मुक्त करके ही रहेंगे। आगे बढो और रूको मत। तुम्हारा यह जो रास्ता है, यह वीरगति प्राप्त करानेवाला पुण्यपंथ है। अतः संदेह मत करो।'

विशेषता : यह गीत राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति से पुरित हैं। किसी भी कालखण्ड में देश के लिए मरमिटने को तैयार वीर सैनिकों में यह राष्ट्रप्रेम एवं उत्साह का संचार करानेवाली ये पंक्तियाँ हैं। सचमुच प्रसाद जी धन्य हैं, जो इस प्रकार की कविता के सर्जक बने। संस्कृतनिष्ठ शब्दावली कविता की विशेषता है।

असंख्य कीर्ति रश्मियाँ विकीर्ण दिव्यदाह सी,

सपूत मातृभूमि के रूको न शूर साहसी ।

अराति सैन्य सिंधु में सुवाड़वाग्नि- से प्रवीर हो,

जयी बनो बढ़े चलो बढ़े चलो ।।

संदर्भ :

यह कवितांश 'हिमाद्रि से' नामक पाठ से संकलित है। यह 'चन्द्रगुप्त' 'नाटक में एक गीत है। इसके रचइता आचार्य जयशंकर प्रसाद हैं। आप हिन्दी में छायावाद' के प्रमुख कवि हैं। 'कामायनी' आपका सबसे प्रसिद्ध काव्य है। प्रसाद जी कवि ही नहीं, अपितु नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार और निबंधकार भी रहे थे।

व्याख्या :

हिमालय के ऊंचे शिखर से भारतमाता अपने पुत्रों को पुकार रही हैं। वह कहती है- 'हे पुत्रो अपने राष्ट्र को विदेशियों से मुक्त करो। तुम्हारी कीर्ति सारी दुनिया में दावानल की भांति फैलेगी। (क्योंकि सारे यश की तुलना, मातृभूमि के लिए मर मिटने के यश के साथ नहीं की जा सकती।) विदेशियों से भरी समुंदर रूपी इस सेना को देखकर डरना नहीं..यदि वे समुद्र हैं, तो तुम लोग समुद्र को भी कल्लोलित करनेवाले बाडबानल हो! तुम मातृभूमि के सपूत हो । आगे बढो और रूको मत।'

विशेषता : यह गीत राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति से पुरित हैं। विदेशियों के साथ लडनेवाले चंद्रगुप्त की सेना को प्रेरित करने के उद्देश्य से यह गीत लिखा गया है। सेल्यूकस की सेना से भारतीय सेना की भिडन्त इतिहास में कहीं दब गयी है। 'चंद्रगुप्त' नाटक उसका स्मरण दिलानेवाला है। संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग हुआ है।

'हिमाद्रि से' कविता का सारांश

'हिमाद्रि से' पाठ के रचयिता आचार्य जयशंकर प्रसाद हैं। आप हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल छायावाद युवा के महावावि होने के साथ-साथ श्रेष्ठ उपन्यासकार, सफल कहानीकार, उत्तम नाहक कार एवं निब अकार भी हैं। आपका सबसे प्रसिद्ध साथ 'कामाचिनी' है। प्रस्तुत पाठ एक गीत है जो चन्द्रगुप्त' नामक नाटक से संकलित है। उस नाटक में अलका नामक स्त्री पात्र इस का गायन करती है। अलका भारतीय सैनिकों को उत्साहित करतें हुए गाती है- "है भारत वो वीरपुत्रो । देखो. हिमालय के उच्च शिखर से भारतमाता आपको पुकार रही हैंवह प्रबुद्ध, स्वयंप्रभा, प्रमाशवती एवं स्वच्छ हैं। वह राष्ट्र को स्वतंत्रता दिलाने की पुकार दे रही हैं। तुम लोग भारतमाता के अमर वीरपुत्र हो। देश की रक्षा का जो मार्ग तुमने अपनाया, वह पुण्यप्रद एवं प्रशस्त है। इसलिए पीछे देखना नहीं.. आगे ही बढ़ते जाओ। आज भारतमाता को बंधनों से नियुक्त करने का दृढ़ निश्चय कर लो। तुम लोग राष्ट्र की रक्षा के लिए संघर्ष करनेवाले हो.... तुम लोगों का यश दिव्यानल की तरह सारे जगत में फैलेगी। तुम भारतमाता के सुपुत्र एवं शूर-साहसी हो 'इसलिए रूको आगें ही बढ़ते जाओ। अराति (शत्रु) की सेना सागर के समान बृहद है किन्तु उसे देखकर डरना नहीं क्योंकि- तुम लोग उससे भी महान हो। तुम सब बडबानल बनकर उस सागर में प्रवेश करो और उसका अन्त कर दो। तुम श्रेष्ठ वीर हो, इसलिए विजय हासिल होकर रहेगी । बढ़े चलो- बढे चलो।

जैसा कि पहले ही संकेत किया जा चुका है- 'चन्द्रगुप्त' नाटक में सेल्युकस की ग्रीक यानी यवन विदेशी सेनाओं के साथ चन्द्रगुप्त की भारतीय सेना का संघर्ष इसकी पृष्ठभूमि है। प्रसाद जी ने जब वह नाटक लिखा, तब भारत में स्वाधीनतासंग्राम अपनी पराकाष्ठा पर था। इसलिए इस गीत के माध्यम से, प्रसाद जी ने देश की जनता को राष्ट्रीयता का उद्बोधन किया। यह गीत राष्ट्रीयता देशभक्ति एवं उत्साह से पूरित है। गीत में संस्कृतनिष्ठ हिन्दी भाषा का प्रयोग हुआ। शैली प्रवाहमान है।

भारतमाता

कवि सुमित्रानंदन पंत का परिचय:

प्रस्तुत कविता 'भारतमाता' के कवि सुमित्रानंदन पंत हैं। आपको 'प्रकृति के सुकुमार कवि' कहा जाता है। आपका जन्म सन् 1900 ई. में हिमाचल प्रदेश के अलमोड़ा जिले के कौसानी गाँव में हुआ था। आपने बचपन से ही प्रकृति के प्रति आकर्षित होकर कविताई आरंभ की। पर जीवन के हर मोड़ में आपने अपनी काव्यधारा को गति और परिवर्तन दिया। इसलिए प्रकृति-प्रेम से आरंभ आपकी काव्य-यात्रा प्रगतिवादी तथा आध्यात्मिकता की ओर चल पड़ी। 1977ई. में आपका निधन हो गया।

सुमित्रानंदन पन्त जी को हिन्दी के प्रमुख चार छायावादी कवियों में से एक माना जाता है। पन्त जी के काव्यों में 'वीणा', 'ग्रन्थि', 'पल्लव', 'युगान्त', 'स्वर्णधूलि' आदि प्रमुख हैं। 'चिदम्बरा' काव्य के लिए आपको भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार की प्राप्ति हुई। प्रस्तुत कविता 'भारतमाता' एक अद्‌भुत कविता है जिसमें तत्कालीन भारत का वास्तविक चित्रण पाया जाता है। इसमें अतीत का गौरवगान, वर्तमान स्थिति का यथार्थ - बोध एवं आशामय भविष्य का एकसाथ अंकन हुआ है। इस कविता में प्रयुक्त 'मैला आँचल' शब्द हिंदी साहित्य क्षेत्र में अत्यंत प्रसिद्ध हुआ और बाद में इस नाम से फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने एक उपन्यास ही लिख डाला।

भारतमाता

भारतमाता ग्रामवासिनी,
खेतों में फैला है श्यामल,
धूल भरा मैला सा आँचल,
गंगा जमुना में आँसू जल,
मिट्टी की प्रतिमा उदासिनी ।

दैन्य जड़ित अपलक नत चितवन,
अधरों में चिर नीरव रोदन,
युग युग के तम से विषण्ण मन,
वह अपने घर में प्रवासिनी ।

तीस कोटि संतान नग्त तन,
अर्ध क्षुदित, शोषित, निरस्त्र जन,
मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन,
नतमस्तक तरुतल निवासिनी ।

स्वर्ण शस्य पर पदतल लुंठित,
धरती-सा सहिष्णु मन कुंठित,
क्रन्दन कम्पित अधर मौन स्मित,
राहु ग्रसित शरदेन्दु हासिनी।

चिन्तित भृकुटि क्षितिज तिमिरांकित,
नमित नयन नभ बाष्पाच्छादित,
आनन श्री छाया शशि उपमित,

ज्ञान मूढ़- गीता प्रकाशिनी ।

सफल अज उसका तप संयम
पिला अंहिसा स्तन्य सुधोपम
हरती जनमन भय, भवतम भ्रम,
जग जननी जीवन विकासिनी।

लघु प्रश्न :

1) "भारतमाता" का वर्णन पंतजी ने कैसे किया?

उत्तरः भारतमाता पराधीन है। भारतमाता की संतान युगों से अज्ञान -अंधकार में है। देश की वर्तमान दुस्थिति को देखकर भारतमाता विषण्ण है।

2) कविता में भारतमाता की संतानों की दुस्थिति का वर्णन कैसे किया गया?

उत्तर: भारतमाता की संतान भूखी, नंगी और शोषित हैं। वे मूढ़; असभ्य और दरिद्र हैं। वे भयभीत और निराश हैं।

3) भारतमाता का आँचल कैसा है?

उत्तर: भारतमाता ग्रामवासिनि है। उसका आँचल डो धूलि से भरा और मैला है। इसका अर्थ हैभारत के गाँवों की स्थिति दयनीय है।

4) भारतमाता की विरोधाभास स्थिति को सुमित्रानंदन पंत जी ने किन शब्दों में किया?

उत्तरः भारतमाता दरिद्र और खिन्न है। उसके खेतों में तो हरा रंग है लेकिन गाँवों में अकाल है। वह इतनी दुःखित हैं कि गंगा और यमुना नदियों में बहता नीर उसके आँसू ही है।

5) भारतमाता संतान की संख्या क्या थी और उसकी स्थिति कैसी थी?

उत्तरः भारतमाता की संतान की संख्या तीस कोटि की थी, वे सब दरिद्र, नंदी, भूखे और बेहाल हैं। वे निराश और मज़बूर हैं।

संन्दर्भ सहित व्याख्या

स्वर्ण शस्य पर पदतल लुंठित,
धरती-सा सहिष्णु मन कुंठित,
क्रन्दन कम्पित अधर मौन स्मित,
राहु ग्रसित शरदेन्दु हासिनी।

संदर्भ :

यह कवितांश भारतमाता' नामक पाठ से संकलित है। इसके कवि श्री सुमित्रानंदन, पन्त हैं। पनजी हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में 'घायाबाद' के कवि हैं। आपको प्रकृति के सुकुमार कवि कहा जाता है। आपको 'चिदम्बरा' काव्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। प्रस्तुत कवितांश में भारतमाता की दीन स्थिति का वर्णन हुआ है।

व्याख्या :

इन पंक्तियों में भारतमाता की वर्तमान दुर्गात का चित्रण हुआ। भारत में स्वर्णिम शस्य है, पर सारा देश अंग्रेजों के पाँवों न्तले दब रहा है। भारत का, मन धरती के समान सहिष्णु हैं किन्तु वह कुंठित है। भारतमाता नामक चाँद को विदेशी शासन रूपी शब्द ने ग्रास लिया।

विशेषता :

इस कविता में पन्तजी ने भारत के अतीत का गौरव, वर्तमान दुर्गति एवं अनि की सुन्दर वालना का एकसाथ चित्रण किया

तीस कोटि संतान नग्त तन,
अर्ध क्षुदित, शोषित, निरस्त्र जन,
मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन,
नतमस्तक तरुतल निवासिनी ।

संदर्भ –

यह कवितांश भारतमाता' नामक पाठ से संकलित है। इसके कवि श्री सुमित्रानंदन, पन्त हैं। पनजी हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में 'घायाबाद' के कवि हैं। आपको प्रकृति के सुकुमार कवि कहा जाता है। आपको 'चिदम्बरा' काव्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। प्रस्तुत कवितांश में भारतमाता की दीन स्थिति का वर्णन हुआ है।

व्याख्या –

इन पंक्तियों में भारतमाता की वर्तमान दुर्गति का चित्रण हुआ। भारतमाता की तीस करोड़ सताब दरिद्र, शोषित एवं असहाय हैं। उनके पास न पढ़ाई है और न सभ्यता वे सिर झुकाकर पेड़ों के नीचे निवास करते हैं।

विशेषता –

इस कविता में, पन्तजी ने भारत अतीत का गौरव, वर्तमान दुर्गति एवं भविष्य की सुन्दर कल्पना का चित्रण किया । उस समय भारत की जनसंख्या तीस करोड़ थी ।

चिन्तित भृकुटि क्षितिज तिमिरांकित,
नमित नयन नभ बाष्पाच्छादित,
आनन श्री छाया शशि उपमित,
ज्ञान मूढ- गीता प्रकाशिनी ।

संदर्भ –

यह कवितांश भारतमाता' नामक पाठ से संकलित है। इसके कवि श्री सुमित्रानंदन, पन्त हैं। पनजी हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में 'घायाबाद' के कवि हैं। आपको प्रकृति के सुकुमार कवि कहा जाता है। आपको 'चिदम्बरा' काव्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। प्रस्तुत कवितांश में भारतमाता की दीन स्थिति का वर्णन हुआ है। प्रस्तुत पंक्तियों में भारतमाता की विरोधाभास एवं विचित्र स्थिति का अंकन किया गया है जो कि सब कुछ होते हुए भी वह दीन एवं दरिद्र हैं।

व्याख्या :

इन पक्तियों में आरतमाता की वर्तमान दुर्गति का चित्रण हुआ। भारतमाता की दुःखित और उनकी आँखें संजल हैं। उन्हें देखकर लगता है मानो आकाश में बाष्प के बादल छाये हुए हो। भारतमाता का मुख छायायुक्त (क्लंकिन) चन्द्रमा के समान है। एक समय पर सारे जगत को ज्ञान की भिक्षा प्रदान करनेवाली सोने की चिडिया भारतमाता आज ज्ञानरहित एवं मूढ मानी जा रही हैं।

विशेषता :

इस कविता में पन्तजी ने भारत के अतीत का गौरव, वर्तमान दुर्गति एवं भविष्य की सुन्दर कलना का कसाथ चित्रण किया।

भारतमाता कविता का सारांश

'भारतमाता' कविता के कवि सुमित्रानन्दन पतंजी हैं। आप हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में छायावाद युग के महाकवि हैं। आपको 'प्रकृति के सुकुमार कवि' कहा जाता है। ''पल्लव', 'ग्रन्थि' 'वाणी' 'युगान्त' आदि आपके प्रसिद्ध काव्य हैं। 'चिदम्बरा' के लिए आपको भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ था। प्रस्तुत कविता में आपने भारत देश को एक माता के रूप में चित्रित किया। इस कविता में देश का मानवीकरण किया गया है और उसका मूर्तरूप एक जननी के रूप में दिखाया गया है

कवि इस कविता की पहली पत्तियों में कहते हैं- 'भारतमाता गाँवों में निवास करने वाली हैं । भारत के' खेतों में हरित रंग फैला हुआ है। किंतु भारत के गाँव बहुत गरीब हैं। इसलिए कविता में संकेतात्मक रूप से बताया गया है कि भारतमाता का आँचल मैला है। अर्थात् देश में धान्य की कभी नहीं हैं, किन्तु हूरस्थ गाँव दरिद्रता से पीडित हैं। गंगा और यमुना नदियों में जो पानी बहता है वह भारतमाता के आँसू हीं हैं। वह मिट्टी की प्रतिमा की तरह मौन और उदास हैं । उनकी आँखों में दीनता है और उनके होठों पर रोहन है। युग-युग से देश में जो अंधकार छाया हुआ है, उसे देखकर वह बहुत चिन्तित हैं।

भारत पर अंग्रेजों का राज चल रहा है, इसलिए वह अपने ही घर में प्रवासि की तरह जा रही हैं। उनकी संतान की संख्या तीस करोड़ है जो दरिद्र, भूखे-नों, शोषित एवं निस्सहाय है। वे मूढ़असभ्य, अशिक्षित एवं पेड़ों के तले निवास वारते हैं। भारतभूमि में सोने की फसलें तो हैं किन्तु देश पराये शासन के पैरों तले बुचला जा रहा है। किन्तु भारतमाता धरत समान सहिष्णु हैं और इतनी चिंता में भी उसके होठों पर मुस्कान है। वह राहु से ग्रासित चंद्रमा के समान हैं।

एक समय पर सारे विश्व को ज्ञान का पाठ पढ़ानेवाला यह देश आज मूर्ख बन गया है। अपनी इस स्थिति को देखकर भारतमाता की आँखें अश्रुपूरित हैं। उसका मुख चिंता से आक्रान्त है जो कलंकित चाँद-सा लगता है।

कविता की अंतिम पंक्तियों में कवि अत्यंत आशावादिता का परिचय देते हुए लिखते हैं कि भारतमाता की स्थिति बदल रही है। भारतमाता अपनी संतान को अहिंसा का दूध पिला कर उसे मज़बूत बना रही हैं। इससे लोगों के भ्रम और भय दूर होंगे। भारतमाता निकट भविष्य में जगज्जननी बन जाएंगी और समस्त जनजीवन का विकास करेंगी

प्रस्तुत कविता में कवि ने भारत के अतीत का गौरव, वर्तमान की दुस्थिति, भविष्य की आशा- इन तीनों स्थितियों कां एक साथ चित्रण किया। यह कविता हिन्दी में बहुत प्रसिद्ध है। कविता में प्रयुक्त 'मैला आँचल" शब्द इतना विख्यात हुआ कि बहुत जल्दी इस नाम से फणीश्वरनाथ 'रेणु' जी ने हिंदी में 'मैला आँचल' नामक उपन्यास लिख डाला। इस कविता की भाषा संस्कृतनिष्ठ है एवं शैली अत्यंत सहज है।

तृतीय खण्ड

स्मृति (कहानी)

कहानीकार पंडित श्रीरामशर्मा का परिचय :

प्रस्तुत कहानी के लेखक पण्डित श्रीराम शर्मा हैं। यह कहानी शिकार साहित्य की कोटि से संबंधित है। श्रीराम शर्माजी को हिन्दी में शिकार साहित्य के अद्वितीय लेखक माना जाता है। आपका जन्म उत्तर प्रदेश के 'किरथरा' नामक गाँव में सन् 1896 ई. को हुआ था। आप कुछ वर्षों तक अध्यापक रहे किन्तु इसके उपरान्त आपने स्वतंत्र लेखन एवं संपादन के कार्य किये। 'विशाल भारत' नामक पत्रिका के संपादक के रूप में आपने विशेष ख्याति आर्जित की। शर्माजी स्वयं एक साहसी, सफल और अनुभवी शिकारी होने के कारण शिकार का रोमांचक आनंद पाठकों तक पहुँचाने में सिद्धहस्त हैं। 'शिकार', 'बोलती प्रतिमा', और 'जंगल के जीव' आपकी शिकार संबंधी महत्त्वपूर्ण पुस्तकें हैं। 'सेवाग्राम की डायरी', 'सन् बयालीस के संस्मरण' आदि आपकी अन्य रचनाएँ हैं।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने अपनी बाल्यावस्था की एक घटना का रोमांचकारी वर्णन किया है। पल-पल बदलती रोचक परिस्थितियों के कारण कहानी आदि से अंत तक पाठकों को वशीभूत कर लेती है । कहानी में बाल मनोविज्ञान का भी यथोचित उपयोग किया गया।

स्मृति

सन् 1908 की बात है। दिसंबर का आखिर या जनवरी का प्रारंभ होगा। चिल्ला जाड़ा पड़ रहा था । दो-चार दिन पूर्व कुछ बूँदा बाँदी हो गयी थी, इसलिए शीत की भयंकरता और बढ़ गयी थी । सायंकाल के साढ़े तीन या चार बजे होंगे। कई साथियों के साथ मैं झरबेरी के बेर तोड़-तोड़कर खा रहा था कि गाँव के पास से एक आदमी ने जोर से पुकारा कि तुम्हारे भाई बुला रहे हैं, शीघ्र ही घर लौट जाओ। मैं घर को चलने लगा। साथ में छोटा भाई भी था । भाई साहब की मार का डर था, इसलिए सहमा हुआ चला जाता था । समझ में नहीं आता था कि कौन-सा कुसूर बन पड़ा। डरते-डरते घरमें घुसा । आशंका थी कि बेर खाने के अपराध में ही तो पेशी न हो । घर आँगन में

भाई साहब को पत्र लिखते पाया। अब पिटने का भ्रम दूर हुआ। हमें देखकर भाई साहब ने कहा - इन पत्रों को ले जाकर मक्खनपुर डाकखाने में डाल आओ । तेजी से जाना जिससे कि शाम की डाक में ही चिट्ठियाँ निकल जाएँ। ये बड़ी जरूरी हैं।

जाड़े के दिन थे ही, तिस पर हवा के प्रकोप से कँपकँपी लग रही थी। हवा मज्जा तक ठिठुरा रही थी, इसलिए हमने कानों को धोती से बाँधा। माँ ने भुँजाने के लिए थोड़े से चने एक धोती में बाँध दिये। हम दोनों भाई अपना-अपना डण्डा लेकर घर से निकल पड़े। उस समय उस बबूल के डण्डे से जितना मोह था, उतना इस उमर में रायफल से नहीं। मेरा डण्डा अनेक साँपों के लिए नारायण वाहन हो चुका था । मक्खनपुर के स्कूल और गाँव के बीच पड़नेवाले आम के पेड़ों से प्रतिवर्ष उससे आम झारे जाते थे । इस कारण वह मूक डण्डा मेरे लिए सजीव - सा प्रतीत होता था । प्रसन्न बदन हम दोनों मक्खनपुर की ओर तेजी से बढ़ने लगे । चिट्ठियों को मैंने टोपी में रख लिया, क्योंकि कुर्ते में जेबें न थीं ।

हम दोनों उछलते-कूदते, एक ही साँस में गाँव से चार फर्लांग दूर उस कुएँ के पास आ गये जिसमें एक अति भयंकर काला साँप पड़ा हुआ था। कुआँ कच्चा था, और चौबीस हाथ (36 फुट) गहरा था। उसमें पानी न था । उसमें न जाने साँप कैसे गिर गया था । कारण कुछ भी हो, हमारा उसके कुएँ में होने का ज्ञान केवल दो महीने का था। बच्चे नटखट होते ही हैं । मक्खनपुर पढ़ने जानेवाली हमारी टोली पूरी वानर टोली थी । एक दिन हम लोग स्कूल से लौट रहे थे कि हमको कुएँ में उझकने की सूझी। सबसे पहले उझकनेवाला मैं ही था। कुएँ में झाँककर एक ढ़ेला फेंका कि उसकी आवाज कैसी होती है।

उसके सुनने के बाद अपनी बोली की प्रतिध्वनि सुनने की इच्छा थी, पर कुएँ में ज्यों ही ढ़ेला गिरा त्यों ही एक फुसकार सुनाई पड़ी। कुएँ के किनारे खड़े हुए हम सब बालक पहले तो उस फुसकार से ऐसे चकित हो गये जैसे किलौलें करता हुआ मृगसमूह अति समीप के कुत्ते की भौंक से चकित हो जाता है। उसके उपरांत सभी ने उझकउझक कर एक-एक ढ़ेला फेंका, और कुएँ से आनेवाली क्रोधपूर्ण फुसकार पर कहकहे लगाए। गाँव से मक्खनपुर जाते और मक्खनपुर से लौटते समय प्रायः प्रतिदिन ही कुएँ में ढेले डाले जाते थे। मैं तो आगे भागकर आ जाता था और टोपी को एक

हाथ से पकड़कर दूसरे हाथ से ढ़ेला फेंकता था । यह रोजाना की आदत हो गयी थी । साँप से फुसकार करवा लेने मैं उस समय बड़ा काम समझता था। इसलिए जैसे ही हम दोनों उस कुएँ की ओर से निकले, कुएँ में ढ़ेला फेंककर फुसकार सुनने की प्रवृत्ति जागृत हो गयी। मैं कुएँ की ओर बढ़ा। छोटा भाई मेरे पीछे ऐसे हो लिया जैसे बड़े मृगशावक के पीछे छोटा मृगशावक हो लेता है । कुएँ के किनारे से एक ढ़ेला उठाया और उझककर एक हाथ से टोपी उतारते हुए साँप पर ढ़ेला गिरा दिया, पर मुझ पर तो बिजली - सी गिर पड़ी । साँप ने फुसकार मारी या नहीं, ढ़ेला उसे लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं। टोपी के हाथ में लेते ही तीनों चिट्ठियाँ चक्कर काटती हुई कुएँ में गिर रही थीं । अकस्मात् जैसे घास चरते हुए हिरण की आत्मा गोली से हत होने पर निकल जाती है और वह तड़पता रह जाता है, उसी भाँति वे चिट्ठियाँ क्या टोपी से निकल गयी, मेरी तो जान निकल गयी। उनके गिरते ही मैंने उनको पकड़ने के लिए एक झपटा भी मारा, ठीक ऐसे जैसे घायल शेर शिकारी को पेड़ पर चढ़ते देख उस पर हमला करता है । पर वे तो पहुँच से बाहर होचुकी थीं। उनकी पकड़ने की घबराहट में मैं स्वयं झटके के कारण कुएँ में गिर गया होता।

कुएँ की पाट पर बैठे हम रो रहे थे - छोटा भाई ढाढें मारकर और मैं चुपचाप आँखें डबडबा रहा था। पतीली में उफान आने से ढ़कना ऊपर उठ जाता है और पानी बाहर टपक जाता है । निराशा, पिटने के भय और उद्वेग से रोने का उफान आता था । पलकों के ढ़कने भीतरी भावों को रोकने का प्रयत्न करते थे पर कपोलों पर आँसू ढलक ही जाते थे। माँ की गोद की याद आती थी। जी चाहता था माँ आकर छाती से लगा ले और लाड़-प्यार करके कह दे कि कोई बात नहीं, चिट्ठियाँ फिर लिख ली जाएँगी । तबियत करती थी कि कुएँ में बहुत-सी मिट्टी डाल दी जाए और घर जाकर कह दिया जाए कि चिट्ठियाँ डालन आए, पर उस समय झूठ बोलना मैं जानता ही न था। घर लौटकर सच बोलने से रुई की भाँति धुनाई होती । मार के ख्याल से शरीर ही नहीं, मन भी काँप जाता था । सच बोलकर पिटने के भावी भय और झूठ बोलकर चिट्ठियों को न पहुँचाने की जिम्मेदारी के बोझ से दबा मैं बैठा सिसक रहा था। इसी सोच-विचार में पंद्रह मिनट होने आये । देर हो रही थी, और उधर दिन का बुढ़ापा बढ़ता जाता था। कहीं भाग जाने को तबियत करती थी, पर पिटने का भय और जिम्मेदारी की दुधारी तलवार कलेजे पर फिर रही थी।

दृढ़ संकल्प से दुविधा की बेड़ियाँ कट जाती हैं। मेरी दुविधा भी दूर हो गयी । कुएँ में घुसकर चिट्ठियों को निकालने का निश्चय किया। कितना भयंकर निर्णय था। पर जो मरने को तैयार हो, उसे क्या? उस समय चिट्ठियाँ निकालने के लिए मैं विषधर से भिड़ने को तैयार हो गया। पासा फेंक दिया था। मौत का आलिंगन हो अथवा साँप से बचकर दूसरा जन्म - इसकी कोई चिंता न थी । पर विश्वासयह था कि डण्डे से साँप को पहले मार दूंगा, तब फिर चिट्ठियाँ उठालूँगा। बस इसी दृढ़ विश्वास के बूते पर मैंने कुएँ में घुसने की ठानी।

छोटा भाई रोता था और उसके रोने का तात्पर्य था कि मेरी मौत मुझे नीचे बुला रही है, यद्यपि वह शब्दों से न कहता था। वास्तव में मौत सजीव और नग्न रूप में कुएँ में बैठी थी, पर उस नग्न मौत से मुठभेड़ के लिए मुझे भी नग्न होना पड़ा। छोटा भाई भी नंगा हुआ । एक धोती मेरी, एक छोटे भाई की, एक चनेवाली, दो कानों से बँधी हुई धोतियाँ- पाँच धोतियाँ और कुछ रस्सी मिलाकर कुएँ की गहराई के लिए काफ़ी हुई। हम लोगों ने धोतियाँ एक दूसरी से बाँधी और खूब खींच-खींचकर आजमा लिया कि गाँठें कड़ी हैं या नहीं | अपनी ओर से कोई धोखे का काम न रखा। धोती के एक सिरे पर डण्डा बाँधा और उसे कुएँ में डाल दिया। दूसरे सिरे को डेंगे (वह लकड़ी जिस पर चरस -पुर टिकता है) के चारों ओर एक चक्कर देकर एक गाँठ लगाकर छोटे भाई को दे दिया । छोटा भाई केवल आठ वर्ष का था, इसीलिए धोती को डेंग से कड़ी करके बाँध दिया और तब उसे खूब मजबूती से पकड़ने के लिए कहा। मैं कुएँ में धोती के सहारे घुसने लगा। छोटा भाई फिर रोने लगा। मैंने उसे आश्वासन दिलाया कि मैं कुएँ के नीचे पहुँचते ही साँप को मार दूंगा, और मेरा विश्वास भी ऐसा ही था । कारण यह था कि इससे पहले मैंने अनेक साँप मारे थे। इसलिए कुएँ में घुसते समय मुझे साँप का तनिक भी भय न था । उसको मारना मैं बाएँ हाथ का खेल समझता था। कुएँ के धरातल से जब चार-पाँच गज रहा हूँगा, तब ध्यान से नीचे को देखा । अकल चकरा गयी । साँप फन फैलाए धरातल से एक हाथ ऊपर उठा हुआ लहरा रहा था। पूँछ और पूँछ के समीप का भाग पृथ्वी पर था, आधा अग्रभाग ऊपर उठा हुआ मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। नीचे डण्डा बँधाथा जो मेरे उतरने की गति से इधर-उधर हिलता था । उसी के कारण शायद मुझे उतरते देख साँप घातक चोट के आसन पर बैठा था। सपेरा जैसे बीन बजाकर काले साँप को खिलाता है और साँप क्रोधित हो, फन फैलाकर खड़ा होता तथा उसका प्रतिद्वन्द्वी -मैं उससे हाथ ऊपर धोती पकड़े लटक रहा था।

धोती डेंग से बँधी होने के कारण कुएँ के बीचोबीच लटक रही थी और मुझे कुएँ के धरातल की परिधि के बीचोबीच ही उतरना था। उसके माने थे साँप के ड़ेढ-दो फुट - गज की दूरी पर पैर रखना और इतनी दूरी पर साँप पैर रखते ही चोट करता । स्मरण रहे कच्चे कुएँ का व्यास बहुत कम होता है। नीचे तो वह डेढ़ गज से अधिक होता ही नहीं। ऐसी दशा में कुएँ में मैं साँप से अधिक-से-अधिक चार फुट की दूरी पर रह सकता था, वह भी उसी दशा में जब साँप मुझ से दूर रहने का प्रयत्न करता, पर उतरना तो था कुएँ के बीच में क्योंकि मेरा साधन बीचोंबीच लटक रहा था। ऊपर से लटककर तो साँप नहीं मारा जा सकता था । उतरना तो था ही । थकावट से ऊपर चढ़ भी नहीं सकता था। अब तक अपने प्रतिद्वन्द्वी को पीठ दिखाने का निश्चय नहीं किया था । यदि ऐसा करता भी तो कुएँ के धरातल पर उतरे बिना क्या मैं ऊपर चढ़ सकता था ? धीरे -धीरे उतरने लगा।

एक-एक इंच ज्यों-ज्यों मैं नीचे उतरता जाता था, त्यों-त्यों मेरी एकाग्रचित्तता बढ़ती जाती थी। मुझे एक सूझ सूझी। दोनों हाथों से धोती पकड़े हुए मैंने अपने पैर कुएँ की बगल में लगा दिए। दीवार से पैर लगाते ही कुछ मिट्टी नीचे गिरी और साँप ने फूँ करके उस पर मुँह मारा। मेरे पैर भी दीवार से हट गये और मेरी टाँगे कमर से समकोण बनाती हुई लटकती रहीं, पर इससे साँप से दूरी और कुएँ की परिधि पर उतरने का ढंग मालूम हो गया । तनिक झूलकर मैंने, अपने पैर कुएँ की बगल से सटाए और कुछ धक्के के साथ अपने प्रतिद्वन्द्वी के सम्मुख कुएँ की दूसरी ओर डेढ़ गज पर कुएँ के धरातल पर खड़ा हो गया। आँखें चार हुईं। शायद एक ने दूसरे को पहचाना। साँप को चक्षुश्रवा कहते हैं। मैं स्वयं चक्षुश्रवा हो रहा था । अन्य इन्द्रियों ने मानो सहानुभूति से अपनी शक्ति आँखों को दे दी हो। साँप के फन की ओर मेरी आँखें लगी हुई थीं किवह अब किस ओर से आक्रमण करता है। साँप ने मोहनी-सी डाल दी थी। शायद वह मेरे आक्रमण की प्रतीक्षा में था, पर जिस विचार और आशा को लेकर मैंने कुएँ में घुसने की ठानी थी वह तो आकाश कुसुम था ।

मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कितनी मिथ्या और उल्टी निकलती हैं। मुझे साँप का साक्षात् होते ही अपनी योजना और आशा की असंभवता प्रतीत हो गयी । डण्डा चलाने के लिए स्थान ही न था। लाठी या डण्डा चलाने के लिए काफ़ी स्थान चाहिए, जिसमें वे घुमाए

जा सकें। साँप को डण्डे से दबाया जा सकता था, पर ऐसा करना मानो तोप के मुहरे पर खड़ा होना था। यदि फन या उसके समीप का भाग न दबा, तो फिर वह पलटकर जरूर काटता, और फन के पास दबाने की कोई संभावना भी होती थी तो फिर उसके पास पड़ी हुई दो चिट्ठियों को कैसे उठाता ? दो चिट्ठियाँ उसके पास उससे सटी हुई पड़ी थीं और एक मेरी ओर थी। मैं तो चिट्ठियाँ लेने ही उतरा था। हम दोनों अपने पैतरों पर डटे थे। उस आसन पर खड़े-खड़े मुझे चार - पाँच मिनट हो गये। दोनों ओर से मोरचे पड़े हुए थे, पर मेरा मोरचा कमज़ोर था। कहीं साँप मुझ पर झपट पड़ता तो मैं - यदि बहुत करता तो उसे पकड़कर कुचलकर मार देता, पर वह तो अचूक तरल विष मेरे शरीर में पहुँचा ही देता और अपने साथ-साथ मुझे भी ले जाता। अब तक साँप ने वार न किया था, इसलिए मैंने भी उसथी। डण्डे से दबाने का ख्याल छोड़ दिया। ऐसा करना उचित भी न था। अब प्रश्न था कि चिट्ठियाँ कैसे उठायी जाएँ। बस, एक सूरत डण्डे से साँप की ओर से चिट्ठियों को सरकाया जाए। यदि साँप टूट पड़ा, तो कोई चारा न था। कुर्ता था, और कोई कपड़ा न था जिसे साँप के मुँह की ओर करके उसके फन को पकड़ लूँ। मारना या बिलकुल छेड़खानी न करना- ये दो मार्ग थे। सो पहला मेरी शक्ति के बाहर था। बाध्य होकर दूसरे मार्ग का अवलंबन करना पड़ा।

डण्डे को लेकर ज्यों ही मैंने साँप की दाई ओर पड़ी चिट्ठी की ओर बढ़ाया कि साँप का फन पीछे की ओर हुआ। धीरेधीरे डण्डा चिट्ठी की ओर बढ़ा और ज्यों ही चिट्ठी के पास पहुँचा कि फुंकार के साथ काली बिजली तड़की और डण्डे पर गिरी। हृदय में कंप हुई, और हाथों ने आज्ञा न मानी। डण्डा छूट पड़ा। मैं तो न मालूम कितना ऊपर उछल गया। जान-बूझकर नहीं, यों ही बिदककर। उछलकर जो खड़ा हुआ तो देखा डण्डे के सिर पर तीन-चार स्थानों पर पीब-सा कुछ लगा हुआ है। वह विष था। साँप ने मानो अपनी शक्ति का सर्टिफिकेट सामने रख दिया था, पर मैं तो उसकी योग्यता का पहले ही कायल था। उस सर्टिफिकेट की जरूरत न थी। साँप ने लगातार फूँ-फूँ करके डण्डे पर तीन चार चोटें कीं। वह डण्डा पहली बार ही इस भांति अपमानित हुआ था, या शायद वह साँप का उपहास कर रहा था।।

उधर ऊपर, फूँ-फूँ और मेरे उछलने और फिर वही धमाके से खड़े होने से छोटे भाई ने समझा कि मेरा कार्य समाप्त हो गया और बंधुत्व का नाता फूँ-फूँ और धमाके में टूटगया। उसने ख्याल किया कि साँप के काटने से मैं गिर गया। मेरे कष्ट और विरह के ख्याल से उसके कोमल हृदय को धक्का लगा । भ्रातृ स्नेह के ताने-बाने कोचोट लगी। उसकी चीख निकल गयी।

छोटे भाई की आशंका बेजान थी पर उस फूँ और धमाके से मेरा साहस कुछ बढ़ गया । दुबारा फिर उसी प्रकार लिफाफे को उठाने की चेष्टा की । अब की बार साँप ने वार भी किया और डण्डे से चिपट भी गया। डण्डा हाथ से छूटा तो नहीं, पर झिझक, सहम अथवा आतंक से अपनी ओर को खिंच गया और गुंजल्क मारता हुआ साँप का पिछला भाग मेरे हाथों से छू गया । उफ.. कितना ठण्डा था ! डण्डे को मैंने एक ओर पटक दिया। यदि कहीं उसका दूसरा वार पहले होता, तो उछलकर मैं साँप पर गिरता और न बचता, लेकिन जब जीवन होता है, तब हजारों ढंग बचने के निकल आते हैं। वह दैवी कृपा थी । डण्डे के मेरी ओर खिंच आने से मेरे और साँप के आसन बदल गये। मैंने तुरंत ही लिफाफे और पोस्टकार्ड चुन लिये । चिट्ठियों को धोती के छोर में बाँध दिया, और छोटे भाई ने उन्हें ऊपर खींच लिया।

डण्डे को साँप के पास से उठाने में भी बड़ी कठिनाई पड़ी । साँप उससे खुलकर उस पर धरना देकर बैठा था। आगे हाथ बढ़ाता तो साँप हाथ पर वार करता, इसलिए कुएँ की बगल से एक मुट्ठी मिट्टी लेकर मैंने उसकी दायी ओर फेंकी कि वह उस पर झपटा, और मैंने दूसरे हाथ से उसकी बायी ओर से डण्डा खींच लिया, पर बात की बात में उसने दूसरी ओर भी वार किया। यदि बीच में डण्डा न होता, तो पैर में उसके दाँत गड़ गये होते।

अब ऊपर चलना कोई कठिन काम न था । केवल हाथों के सहारे, पैरों को बिना कहीं लगाए हुए 35 फुट ऊपर चढ़ना मुझसे अब नहीं हो सकता। 15-20 फुट बिना पैरों के सहारे, केवल हाथों के बल चढ़ने की हिम्मत रखता हूँ, कम ही अधिक नहीं। पर उस ग्यारह वर्ष की अवस्था मे में 36 फुट चढ़ा। बाहे भर गयी थी। छाती फूल गयी थी। धौंकनी चल रही थी । पर एक-एक इंच सरक-सरक कर अपनी भुजाओं के बल मैं ऊपर चढ़ आया । यदि हाथ छूट जाते तो क्या होता, इसका

अनुमान करना कठिन है। ऊपर आकर बेहाल होकर, थोड़ी देर तक पड़ा रहा । देह को झाडझूड़कर धोती-कुर्ता पहना। फिर किशनपुर के लड़के को, जिसने ऊपर चढ़ने की चेष्टा को देखा था ताकीद करके कि वह कुएँवाली घटना किसी से न कहे, हम लोग आगे बढ़े।
सन् 1915 में मैट्रिकुलेशन पास करने के उपरान्त यह घटना मैंने माँ को सुनायी। सजल नेत्रों से माँ ने मुझे अपनी गोद में ऐसे बैठा लिया जैसे चिड़िया अपने बच्चों को डैने के नीचे छिपा लेती है।

कितने अच्छे थे वे दिन! उस समय रायफल न थी, डण्डा था और डण्डे से शिकार कम-से-कम उस साँप का शिकार - रायफल के शिकार से कम रोचक और भयानक न था।

लघु प्रश्न

1. स्मृति' कहानी तो लेखक कौन हैं वे किस प्रकार के साहित्य के लिए प्रसिद्ध हैं?

उत्तर - 'स्मृति' नामक कहानी के लेखक पण्डित श्री रामशर्मा हैं। आप हिन्दी में शिकार साहित्य में के सबसे प्रसिद्ध लेखक है।

2. लेखक की माँ ने रास्ते में खाने के लिए क्या दिया ?

उत्तर : लेखक श्री रामशर्मा कुछ पत्र ड़ाक में डाल ने मक्खनपुर जा रहे थे। लेखक के गाँव से मक्खनपुर बहुत दूर था। इसलिए माँ ने रास्ते में खाने धोती में चने बांध दिये।

3. लेखक ने किस आशा को लेकर कुए में घुसने का निर्णय लिया?

उत्तर - लेखक ने बचपन में अनेक साँप मारे थे । उनको सौंप से कोई डर नहीं था और साँप को मारना वे बाये हाथ का खेल समझते थे। इसलिए उन्होंने कुएँ में घुसने का निर्णय लिया।

4. नारायण वाहन का अर्थ क्या है और इस कहानी में उसका क्यों प्रस्ताव है?

उत्तर- नारायण वाहन का अर्थ है- गरुड। गरुड को साँपों के विध्वंसक माना जाता है। हमारे लेखक भी बचपन में अपने बबूल के डण्डे से अनेक साँप मारे थे। इसलिए वे कहते हैं कि यह डण्डा अनेक साँपों के लिए नारायण वाहन बन चुका था।

5. श्रीरामशर्मा की कुछ प्रसिद्ध कृतियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- 'शिकार', 'बोलती प्रतिमा', और 'जंगल के जीव' आपकी शिकार संबंधी महत्त्वपूर्ण पुस्तकें हैं। 'सेवाग्राम की डायरी', 'सन् बयालीस के संस्मरण' इत्यादि आपकी अन्य कृतियाँ हैं।

संदर्भ सहित व्याख्या

1. जिस विचार और आशा को लेकर मैंने कुएँ में घुसने का निर्णय लिया, वह तो आकाश कुमुम था।

संदर्भ

प्रस्तुत वाक्य “स्मृति” नामक कहानी से संकलित है। इसके लेखक पंडित श्रीरामशर्मा हैं। आप विशाल भारत' पत्रिका के संपादक थे। प्रस्तुत कहानी ‘स्मृति' लेखक के बचपन की एक घटना पर आधारित रोचक वाहानी है। बारह वर्ष की उम्र में लेखक ने एक भयानक निर्णय लिया था और उसके चलते उनकी जिंदगी खतरे में पड गयी थी जिसका स्मरण वे लगभग तीस वर्ष के उपरांत करते हैं। इस समय लेखक के द्वारा लिखी गयी ये पंक्तियाँ हैं।

व्याख्या

बारह वर्ष की उम्र में लेखक कुछ आवश्यक पत्र डाक में डालने मक्खनपुर जा रहे थे। साथ में आठ वर्षीय छोटा भाई भी था। जाने के रास्ते में एक कुएँ में साँप था और उसी कुएँ में पत्र गिर गये थे। लेखक साँप को मारने के उद्देश्य से कुएं में घुसे लेकिन स्थिति विपरित थी। यह उनकी उम्र थी, जिसके कारण लेखक बिना कुछ सोचे और समझे, कुएँ में घुसने का साहस किया था। जब अब कहानी लिखते समय जब वे शिकारी बन गये थे और उस घटना को याद कर रहे थे, तब उनको लग रहा था कि उनका निर्णय कितना भयानक था!

विशेषता

लेखक का निर्णय खतरनाक था। क्योंकि कुएँ में डण्डा घुमाने के लिए पर्याप्त जगह नहीं थी। कुआँ कच्चा था और उसकी परिधि जैसे ही अंदर घुसे, कम होती जा रही थी। लेखक जैसे तैसे अंदर तो घुस गये किंतु सांप से भिडते समय डण्डा चलाने हेतु उनके पास वह जगह नहीं रही जिसकी उनको अपेक्षा थी।

2. सांप को चक्षुश्रवा कहते हैं। सांप साथ मैं भी चक्षुश्रवा हो रहा था।

संदर्भ

प्रस्तुत वाक्य "स्मृति" नामक कहानी से संकलित है। इसके लेखक पंडित श्रीरामशर्मा हैं। आप विशाल भारत' पत्रिका के संपादक थे। प्रस्तुत कहानी 'स्मृति' लेखक के बचपन की एक घटना पर आधारित रोचक वाहानी है। बारह वर्ष की उम्र में लेखक ने एक भयानक निर्णय लिया था और उसके चलते उनकी जिंदगी खतरे में पड गयी थी जिसका स्मरण वे लगभग तीस वर्ष के उपरांत करते हैं। इस समय लेखक के द्वारा लिखी गयी ये पंक्तियाँ हैं।

व्याख्या

बारह वर्ष की उम्र में लेखक कुछ आवश्यक पत्र डाक में डालने मक्खनपुर जा रहे थे। साथ में आठ वर्षीय छोटा भाई भी था। जाने के रास्ते में, एक कुएं में सांप था जिसमें पत्र गिर गये । लेखक साँप को मारने के उद्देश्य से कुएं में घुसे, साँप से उनका आमना - सामना हुआ।

विशेषता

लेखक बचपन से ही अत्यंत कुशल शिकारी थे। शिकारी के सभी गुण उनमें तभी से मौजूद थे।

3. सजल नेत्रों से माँ ने मुझे अपनी गोद में ऐसे बिठा लिया, जैसे कि चिडिया अपने बच्चे को डायने के नीचे छिपा लेती है।

संदर्भ

प्रस्तुत वाक्य "स्मृति" नामक कहानी से संकलित है। इसके लेखक पंडित श्रीरामशर्मा हैं। आप विशाल भारत' पत्रिका के संपादक थे। प्रस्तुत कहानी 'स्मृति' लेखक के बचपन की एक घटना पर आधारित रोचक वाहानी है। बारह वर्ष की उम्र में लेखक ने एक भयानक निर्णय लिया था और उसके चलते उनकी जिंदगी खतरे में पड गयी थी जिसका स्मरण वे लगभग तीस वर्ष के उपरांत करते हैं। इस समय लेखक के द्वारा लिखी गयी ये पंक्तियाँ हैं।

व्याख्या : बारह वर्ष की उम्र में लेखक कुछ आवश्यक पत्र एक में डालने मक्खनपुर, जा रहे थे। साथ में आठ वर्षीय छोटा भाई भी था। जाने के रास्ते में, एक कुएँ में साँप था, जिसमें पत्र गिर गये। लेखक साँप से भिड़कर पत्र लेकर आये। दो साल के बाद जब माँ ने यह सब जाना, तब वह गद्‌गद हो उठी।

विशेषता

माता वा वात्सल्य इस वाक्य में चित्रित है। यह उनकी उम्र थी, जिसके कारण लेखक बिना कुछ सोचे और समझे, कुएँ में घुसने का साहस किया था। जब अब कहानी लिखते समय जब वे शिकारी बन गये थे और उस घटना को याद कर रहे थे, तब उनको लग रहा था कि उनका निर्णय कितना भयानक था!

कहानी का सारांश

पण्डित श्रीराम शर्मा को हिन्दी में शिकार साहित्य के अद्वितीय लेखक माना जाता है। आपका जन्म उत्तर प्रदेश के 'किरथरा' नामक गाँव में सन् 1896 ई. को हुआ था। आप कुछ वर्षों तक अध्यापक रहे किन्तु इसके उपरान्त आपने स्वतंत्र लेखन एवं संपादन के कार्य किये। 'विशाल भारत' नामक पत्रिका के संपादक के रूप में आपने विशेष ख्याति आर्जित की। शर्माजी स्वयं एक साहसी, सफल और अनुभवी शिकारी होने के कारण शिकार का रोमांचक आनंद पाठकों तक पहुँचाने में सिद्धहस्त हैं। 'शिकार', 'बोलती प्रतिमा', और 'जंगल के जीव' आपकी शिकार संबंधी महत्त्वपूर्ण पुस्तकें हैं। 'सेवाग्राम की डायरी', 'सन् बयालीस के संस्मरण' आदि आपकी अन्य रचनाएँ हैं।

लेखक मक्खनपुरा से दूर किशनपुरा नामक गाँव के रहनेवाले थे। जब बारह-तेरह वर्ष के थे, तब जो घटना घटी, उसका स्मरण इस कहानी में वे कर रहे हैं। उनके बडे भाई साहब वे खूब डरते थे और उनकी आज्ञा पर पास के गाँव मक्खनपुरा में डाकघर में तीन पत्र डालने जा रहे थे। क्योंकि किशनपुरा में डाक की व्यवस्था थी नहीं। उनके साथ उनके छोटे भाई भी निकले। लेखक का डण्डा उनके लिए अत्यंत प्रिय था। बबूल के उस डण्डे से लेखक को इतना मोह था कि आजकल रायफल

से भी उनका उतना मोह नहीं बन पाया था। क्योंकि लेखक का वह डण्डा अनेक सांपों के लिए नारायणवाहन हो चुका था। वे अपने साथ माँ केद्वारा दिये गये चने की (धोती वाली) गठरी भी साथ ले जा रहे थे। पत्र उन्होंने अपनी धोतीवाली पगडी में बांधे थे।

रास्ते में एक कुआँ पडता था। उस कुएँ में न जाने एक सांप आकर गिर पडा था जिसकी जानकारी लेखक को हाल ही में हुई थी। जब स्कूल जा रहे थे तब लेखक ने एकबार दोस्तों के साथ हँसी मजाक में उस कुएँ में ढेले डाले और तब पता चला कि उसमें एक सांप था क्यों कि ढेले के गिरने के तुरंत बाद सांप की फुफकार ध्वनि आई थी। तब से लेकर रोज उस रास्ते में आते-जाते वक्त ढेले डालना लेखक का रोजाना व्यवहार हो चला था।

लेकिन जब वे आज पत्र डाक में डालने मक्खनपुरा जा रहे, तब इसी आदत के कारण उनकी टोपी से पत्र गिर गये। क्योंकि उनकी यह भी आदत थी कि धेला कुएँ में डालते समय एक हाथ से टोपी निकालकर अंदर झांककर देखते थे। अब पत्र कैसे बाहर लाया जाये? लेखक दुविधा में पड गये किंतु दृढ संकल्प लेकर वे धोती सब इकट्ठा किये रस्सी बनाकर उसके सहारे कुएँ के अंदर उतरे। कुएँ में सांप से वे कतई नहीं डरते थे क्योंकि वे अनेक सांपों को मार चुके थे। लेखक साँप को मारने के उद्देश्य से कुएं में तो घुसे लेकिन स्थिति विपरित थी। यह उनकी उम्र थी, जिसके कारण लेखक ने बिना कुछ सोचे और समझे, कुएँ में घुसने का साहस किया था। जब अब कहानी लिखते समय जब वे अनुभवी शिकारी बन गये थे और उस घटना को याद कर रहे थे, तब उनको लग रहा था कि उनका निर्णय कितना भयानक था! क्योंकि कुएँ में डण्डा घुमाने के लिए पर्याप्त जगह नहीं थी। कुआँ कच्चा था और उसकी परिधि जैसे ही अंदर घुसे, कम होती जा रही थी। लेखक जैसे तैसे अंदर तो घुस गये किंतु सांप से भिडते समय डण्डा चलाने हेतु उनके पास वह जगह नहीं रही जिसकी उनको अपेक्षा थी।

फिर भी न डरते हुए लेखक ने सांप का आमना-सामना किया और बहुत उछल-कूद के बाद वे सांप की जगह आये और पत्रों को तुरंत उठाकर ऊपर भेज दिये। किंतु हुआ यह कि 36 फीट कुएँ से उनको बाहर आना पडा फिर भी वे यह साहस करके सकुशल वापस आये।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने अपनी बाल्यावस्था की एक घटना का रोमांचकारी वर्णन किया है। पल-पल बदलती रोचक परिस्थितियों के कारण कहानी आदि से अंत तक पाठकों को वशीभूत कर लेती है । कहानी में बाल मनोविज्ञान का भी यथोचित उपयोग किया गया।

चतुर्थ खण्ड

संन्यासी

कहानीकार सुदर्शन का परिचय

प्रस्तुत कहानी 'संन्यासी' सुदर्शन द्वारा लिखी गयी है। प्रेमचन्द के समकालीन कहानीकारों में सुदर्शन जी अत्यंत प्रमुख हैं। आपका जन्म पंजाब के सियालकोट में सन् 1896 ई. में हुआ था। वे आर्य समाजी थे। कॉलेज की शिक्षा के बाद वे 'दैनिक आर्य गजेट' नामक पत्रिका के संपादक के रूप में कार्य करते रहे और उसी दौरान कहानियाँ और एकांकी लिखे। फिल्मी जगत में काम करने हेतु आप बंबई पहुँचकर वहीं बस गए। आपका निधन 1967 ई. में हो गया।

सुदर्शन जी ने अपना लेखन उर्दू में आरंभ किया और फिर हिन्दी में आ गए। यथार्थ और आदर्श का सुंदर मिश्रण आपकी कहानियों की विशिष्टताएँ हैं। आपके कहानी-संकलनों में 'रामकुटिया', 'पुष्पलता', 'परिवर्तन', 'तीर्थयात्रा', 'पनघट', 'सुदर्शन सुमन' आदि प्रसिद्ध हैं। प्रस्तुत कहानी 'संन्यासी' में आपने एक जीवन - यथार्थ का चित्रण किया। उनके अनुसार कर्तव्य पालन से ही मन को सच्चे आनंद की प्राप्ति होती है। पालू नामक युवक के द्वारा उन्होंने उपर्युक्त सत्य का उद्घाटन करवाया।

संन्यासी (कहानी)

लखनवाला, जिला गुजरात का पालू उन मनुष्यों में से था, गुणों की गुथली कहे जाते हैं। यदि वह गाँव में न होता तो होलियों में झाँकियों का, दीवाली पर जुए का और दशहरे पर रामलीला का प्रबन्ध कठिन हो जाता था। उन दिनों उसे खाने-पीने तक की सुध न रहती और वह तन-मन से इन कार्यों में लीन रहता था। गाँव में कोई गानेवाला आ जाता तो लोग पालू के पास जाते कि देखो कुछ राग विद्या जानता भी है या यों ही हमें गँवार समझकर धोखा देने आया है। पालू अभिमान से सिर हिलाता और उत्तर देता- " पालू के रहते हुए यह असंभव है, बाद की भगवान जाने।" केवल इतना ही नहीं, वह बाँसुरी और घड़ा बजाने में भी पूरा उस्ताद था। हीरा - राँझे का किस्सा पढ़ने में तो दूर-दूर तक कोई उसके जोड़ का न था। दोपहर के समय जब वह पीपल के वृक्ष-तले बैठकर ऊँचे स्वर से जोगी और सहती के प्रश्नोत्तर पढ़ता तो सारे गाँव के लोग इकट्ठे हो जाते और उसकी प्रशंसा के पुल बाँध देते। वह कुछ दिनों के लिए भी बाहर चला जाता तो गाँव में उदासी छा जाती। पर उसके घर के लोग उसके गुणों की कदर न करते थे। पालू मन ही मन कुढ़ता था। तीसरे पहर घर जाता तो माँ ठण्डी रोटियाँ सामने रख देती। रोटियाँ ठण्डी होती थीं, पर गालियों की भाजी गर्म होती थी। उस पर भाभियाँ तीखे तानों से कड़वी मिर्च छिड़क देती थीं। पालू उन मिर्चों से कभी-कभी बिलबिला उठता था। परन्तु लोगों की सहानुभूति मिसरी की डली का काम दे जाती। वे तीन भाई थे- सुचालू, बालू और पालू। सुचालू गवर्नमेण्ट स्कूल, गुजरात में व्यायाम का मास्टर था, इसलिए लोग उसे सुचालमल के नाम से पुकारते थे। बालू दूकान करता था, इसलिए उसे बालकराम कहते थे। परंतु पालू की रुचि सर्वथा खेल - कूद में ही थी। पिता समझाता, माँ उपदेश करती, भाई निष्ठुर दृष्टि से देखते। मगर पालू सुना-अनसुना कर देता और अपने रंग में मस्त रहता।इसी प्रकार पालू की आयु के तैंतीस वर्ष बीत गए, परन्तु कोई लड़की देने को तैयार न हुआ। माँ दुःखी होती थी परन्तु पालू हँसकर टाल देता और कहता - " मैं ब्याह करके क्या करूँगा? मुझे इस बंधन से दूर ही रहने दो।" परन्तु विधाता के लेख को कौन मिटा सकता है? पाँच मील की दूरी पर टाँडा नामक गाँव है। वहाँ एक चौधरी ने पालू को देखा और लट्टू हो गया। रूप-रंग में सुदर था, शरीर का सुडौल। जात-पाँत पूछकर उसने अपनी बेटी ब्याह दी।

पालू के जीवन में पलटा आ गया। पहले वह दिन में घण्टे -घण्टे घर से बाहर रहता था और घर से ऐसा घबराता था जैसे चिड़िया पिंजरे से। परंतु अब वहीं पिंजरा उसके लिए फूलों की वाटिका

बन गया, जिससे बाहर पाँव रखते हुए भी उसका चित्त उदास हो जाता था। स्त्री क्या आयी, उसका संसार ही बदल गया। अब उसे न बाँसुरी से प्रेम था, न किस्सों से। लोग कहते-"यार ! कैसे जोरूदास हो, कभी बाहर ही नहीं निकलते । हमारे सब साज-समाज उजड गए। क्या भाभी कभी कमरे से बाहर निकलने की भी आज्ञा नहीं देती ?" माँ कहती- "ब्याह सबके होते आये हैं, परंतु तेरे सरीखा निर्लज्ज किसीको नहीं देखा कि दिन-रात स्त्री के पास ही बैठा रहे । " न पिता उसके मुँह पर उसे कुछ कहना उचित नहीं समझता था, मगर सुना कर कह दिया करता था कि "जब मेरा ब्याह हुआ था, तब मैंने दिन के समय तीन वर्ष तक स्त्री के साथ बात तक न की, पर अब तो समय का रंग ही पलट गया है । आज ब्याह होता है, कुल घुल - घुलकर बातें होने लगती हैं।"

पालू लाख अनपढ़ था, परंतु मूर्ख नहीं था कि इन बातों का अर्थ न समझता। पर स्वभाव का बेपरवाह था, हँस कर टाल देता । होते-होते नौबत यहाँ तक पहुँची कि भाई- भाभियाँ बात-बात में ताने देने और घृणा की दृष्टि से देखने लगे। मनुष्य सब कुछ सह लेता है, पर अपमान नहीं सह सकता। पालू भी बार-बार के अपमान को देखकर चुप न रह सका। एक दिन पिता के सामने जाकर बोला- " क्या यह रोज-रोज ऐसा ही होता रहेगा ? पिता भी उससे बहुत दुखी था । झल्लाकर बोला- तुम जैसों के साथ ऐसा ही होना चाहिए। "

"पराई बेटी को विष खिला दूँ ? "

"नहीं गले में डाल लो। जगत में तुम्हारा ही अनोखा ब्याह हुआ है।"

पालू ने कुछ धीरज से पूछा "आप अपना विचार प्रकट कर दें, मैं भी तो कुछ जान पाऊँ ।"

"सारे गाँव में तुम्हारी मिट्टी उड रही है। अभी बताने की बात बाकी रह गयी है?"

"पर मैंने ऐसी कोई बात नहीं की जिससे मेरी निंदा हो । "

"सारा दिन स्त्री के पास बैठे रहते हो, यह क्या थोड़ी निंदा की बात है ? तुम सुधर जाओ, नहीं तोसारी उमर रोते रहोगे। हमारा क्या है, नदी के किनारे के पेड़ हैं, आज हैं कल बह गए। परन्तु इतना तो संतोष रहे कि जीते-जी अपने सब पुत्रों को कमाते-खाते देख लिया । "

यह कहते-कहते पिता के नेत्रों में आँसू भर आए। उनकी एक-एक बात जँची-तुली । पालू को अपनी भूल का ज्ञान हो गया, सिर झुकाकर बोला- " आप जो कहें, मैं वही करने को तैयार हूँ

इतनी जल्दी काम बन जाएगा, पिता को यह आशा न थी । प्रसन्न होकर कहने लगा- “जो कहूँगा, करोगे?" "

“हाँ, करूँगा।”

" स्त्री को उसके घर भेज दो।"

पालू को ऐसा मालूम हुआ, मानों किसी ने विष का प्याला सामने रख दिया हो। यदि उसे यह कहा जाता कि, “तुम घर से चले जाओ और एक-दो वर्ष वापस न लौटो" तो वह सिर न हिलाता। परंतु इस बात से जो उसकी भूलों की स्वीकृति थी, उसके अंतःकरण को दारुण दुख हुआ। उसे ऐसा मालूम हुआ मानों उसका पिता उसे दण्ड दे रहा है और उससे बदला ले रहा है। वह दण्ड भुगतने को तैयार था, परंतु उसका पिता उस बात को जान पाए, यह उसे स्वीकार न था। वह इसे अपना अपमान समझता था । कुछ क्षण चुप रहकरउसने क्रोध से काँपते हुए उत्तर दिया- "यह न होगा ।'

“मेरी कुछ परवाह न करोगे ?"

"करूँगा, पर स्त्री को उसके घर न भेजूँगा । "

" “तो मैं भी तुम्हें पराठे न खिलाता रहूँगा । कल से किनारा खोज लेना।“

जब मनुष्य को क्रोध आता है, तो सबसे पहले जीभ बेकाबू हो जाती है । पालू ने भी उचित-अनुचित का विचार न किया । उसने अकड़कर उत्तर दिया- “मैं इसी घर से खाऊँगा और देखूँगा कि मुझे कौन उठा देता है ?" बात साधारण थी, परन्तु हृदयों में गाँठ बँध गयी । पालू को उसकी स्त्री ने भी समझाया, माँ ने भी, पर उसने किसीकी बात पर कान न दिया और बेपरवाही से सबको टाल दिया । पालू की स्त्री की गोद में दो वर्ष का बालक खेलता था, जिस पर माता-पिता दोनों न्यौछावर थे। एकाएक उजाले में अन्धकार ने सिर डाला। गाँव में हैजे का रोग फूट पड़ा । इसका पहला शिकार पालू की स्त्री हुई ।

***

पालू अजीब स्वभाव का आदमी था। धीरता और नम्रता उसके स्वभाव के सर्वथा प्रतिकूल थीं। बाल्य अवस्था में वह बेपरवाह था। बेपरवाही चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी । आठ-आठ दिन घर से बाहर रहना, उसके लिए साधारण बात थी । फिर ब्याह हुआ, प्रेम ने हृदय के साथ पाँव

को भी जकड़ लिया । यह समय था, जब उसके नेत्र एकाएक बाह्य संसार की ओर से बंद हो गए और वह प्रेम - पाश में इस तरह फँस गया जैसे शहद में मक्खी । मित्र- मण्डली नोंक-झोंक करती थी, भाई-बन्धु आँखों में मुक्सराते थे परंतु उसके नेत्र और कान दोनों बंद थे। परन्तु जब स्त्री मर गयी तब पालू की प्रकृति फिर चंचल हो उठी। इस चंचलता को न खेल-तमाशे रोक सके, नमनोरंजक किस्से-कहानियाँ। ये दोनो रास्ते उसके परिचित थे। प्राय ऐसा देखा गया है कि पढ़े-लिखे लोगों की अपेक्षा अनपढ़ और मूर्ख लोग अपनी टेक का ज्यादा ख्याल रखते हैं और इसके लिए तनमन-धन तक न्यौछावर कर देते हैं । पालू में यह गुण कूट-कूट कर भरा था। माता-पिता ने दोबारा ब्याह करने की ठानी, परन्तु पालू ने स्वीकार न किया और उनसे साफ-साफ कह दिया कि " जिस बंधन से एक बार छूट चुका हूँ, उसमें दोबारा न फरूँगा । गृहस्थी का सुख भोगमेरे प्रारब्ध में न था । यदि होता तो मेरी पहली स्त्री क्यों मरती ? अब तो इसी प्रकार जीवन बिता दूँगा । " परन्तु यह अवस्था भी अधिक समय तक न रह सकी। तीन मास के अंदर-अंदर उसके माता-पिता दोनों चल बसे । पालू के हृदय पर दूसरी चोट लगी । क्रिया-कर्म से निवृत्त हुआ तो रोता हुआ बड़ी भाभी के पाँव में गिर और बोला- “अब तो तुम्हीं बचा सकती हो, वरना मेरे मरने में कोई कसर नहीं पड़ा । "

भाभी ने उसके सिर पर हाथ फेरकर कहा - " मैं तुम्हें पुत्रों से बढ़कर चाहूँगी। क्या हुआ जो तुम्हारे माता-पिता मर गए, हम तो जीते हैं।"

"यह नहीं, मेरे बेटे को संभालो । मैं अब घर में न रहूँगा । " उसकी भाभी अवाक् रह गयी । पालू अब संपत्ति बाँटने के लिए झगड़ा करेगा, उसे इस बात की शंका थी । परन्तु यह सुनकर कि पालू घर बार छोड़ जाने को तैयार है, उसका हृदय आनंद से झूमने लगा। मगर वह अपने हर्ष को छिपाकर बोली- “ यह क्या? तुम भी हमें छोड़ जाओगे, तो हमारा जी यहाँ कैसे लगेगा ?"

"नहीं, अब यह घर साँप के समान हँसने दौड़ता है। मैं यहाँ रहूँगा, तो जीता न बचूँगा। मेरे बच्चे के सिरपर हाथ रखो। मुझे न धन चाहिए, न जायदाद। मैं सांसारिक बंधनों से मुक्त होना चाहता हूँ। अब मैं संन्यासी बनूँगा । "

यह कहकर उसने अपने पुत्र सुखदयाल को पकड़कर भाभी को गोद में डाल दिया और रोते हुए बोला- " इसकी माँ मर चुकी है, पिता संन्यासी हो रहा है, परमात्मा के लिए इसका दिल न दुखाना ।

" बालक ने जब देखा पिता रो रहा है, तो वह भी रोने लगा और उसके गले से लिपट गया । परन्तु पालू के पाँव को यह बन्धन भी न बाँध सका। उसने हृदय पर पत्थर रखा और अपने संकल्प को दृढ़ कर लिया ।

कैसा हृदय-बेधक दृश्य था ? सायंकाल को जब पशु पक्षी अपने-अपने बच्चों के पास घरों को वापस लौट रहे थे, पालू अपने बच्चे को छोड़कर घर से बाहर जा रहा था।

दो वर्ष बीत गए। पालू की अवस्था में आकाश-पाताल का अंतर पड़ गया। वह पर्वत पर रहता था, पत्थरों पर सोता था। रात को जागता था और प्रतिक्षण ईश्वर भक्ति में मग्न रहता था । उसके इस आत्मसंयम की सारे ऋषीकेश में धूम मच गयी। यात्री लोग जब तक स्वामी विद्यानंद के दर्शन न कर लेते, अपनी यात्रा को सफल न समझते। उनकी कुटिया बहुत दूर पर्वत की कंदरा में थी, परंतु आकर्षण से लोग वहाँ खिंच चले आते थे। उनकी कुटिया में रूपये पैसे और फल-मेवे के ढेर लगे रहते थे । परंतु वे त्याग के मूर्तिमान् रूप उनकी ओर आँख भी न उठाते थे। हाँ, इतना लाभ अवश्य हुआ कि उनके निमित्त स्वामी जी के बीसों चेले बन गए। स्वामीजी के मुखमण्डल से तेज बरसता था, जैसे सूरज से किरणें निकलती हैं। परन्तु इतना होते हुए भी मन को शांति न थी । बहुधा सोचा करते कि "देश-देशांतर में मेरी भक्ति की धूम मच रही है, दूर-दूर मेरे डंके बज रहे हैं, मेरे मन को शांति क्यों नहीं ? सोता हूँ तो सुख की निद्रा नहीं आती, जागता हूँ तो पूजा-पाठ में मन एकाग्र नहीं होता। "

*****

इसी प्रकार दो वर्ष बीत गए । प्रायः उनके मन में आवाजआती कि- "तू अपने आदर्श से दूर जा रहा है।" स्वामी जी बैठे-बैठे चौंक उठते, मानो किसी ने काँटा चुभो दिया हो। बार-बार सोचते परंतु कारण समझ में न आता । तब वे घबराकर रोने लग जाते । इससे मन तो हल्का हो जाता था परन्तु चित्त को शांति फिर भी न मिलती थी। उस समय सोचते - "संसार मुझे धर्मावतार समझ रहा है, पर कौन जानता है कि यहाँ आठों पहर आग सुलग रही है। पता नहीं, पिछले जन्म में कौन पाप किए थे ? "

अंत में एक दिन उन्होंने दण्ड हाथ में लिया और अपने गुरु स्वामी प्रकाशानंद के पास जा पहुँचे। उसी समय वह रामायण की कथा से निवृत्त हुए थे। उन्होंने ज्योंही स्वामी विद्यानंद को देखा, की तरह खिल गए। उनको विद्यानंद पर गर्व था। हँसकर बोले" कहिए, क्या हाल है ? शरीर तो अच्छा है ?"

परंतु स्वामी विद्यानंद ने कोई उत्तर न दिया । वह रोते हुए उनके चरणों में लिपट गए। स्वामी प्रकाशांनद को बड़ा आश्चर्य हुआ। अपने सबसे प्रिय शिष्य को रोते देखकर उनकी आत्मा को आघात-सा लगा। उन्हें प्यार से उठाकर बोले- "क्यों कुशल तो है ?" स्वामी विद्यानंद ने बालकों की तरह फूट- फूटकर रोते हुए कहा- "महाराज! मैं पाखण्डी हूँ । संसार मुझे धर्मावतार कह रहा है, परंतु मेरे मन में अभी तक अशांति भरी है । "

जिस प्रकार एक भले- चंगे मनुष्य को देखने के कुछ क्षण पश्चात् उसकी मृत्यु का समाचार सुनकर विश्वास नहीं होता, उसी प्रकार स्वामी प्रकाशानंद को अपने सदाचारी शिष्य की बात पर विश्वास न हुआ। उन्होंने इस व्यंग्य से, मानों उनके कानों ने धोखा खाया हो, पूछा- "क्या कहा ?"

स्वामी विद्यानंद ने सिर झुकाकर उत्तर दिया- " महाराज.. मेराशरीर दग्ध हो रहा है, परंतु आत्मा अभी तक निर्मल नहीं है।' " इससे तुम्हारा अभिप्राय क्या है ? है?" "

"मैं प्रतिक्षण अशांत रहता हूँ, मानो कोई कर्तव्य है, जिसे मैं पूरा नहीं कर रहा हूँ ।"

इसका कारण क्या हो सकता है, जानते हो ?" " जानता तो आपकी सेवा में क्यों आता?"

एकाएक स्वामी प्रकाशानंद को बात याद आ गयी। वह हँसकर बोले, "तुम्हारी स्त्री है ? "

"उसकी मृत्यु ही तो संन्यास का कारण हुई थी । "

"माता ?"

"वह भी नहीं । "

"पिता?"

"वह भी मर चुके हैं । "

"कोई बाल-बच्चा ?"

"हाँ, एक बच्चा है, अब चार वर्ष का होगा । "

"उसका पालन-पोषण कौन करता है?"

"मेरा भाई और उसकी स्त्री।"

स्वामी प्रकाशानंद का मुखमण्डल चमक उठा। वह हँसकर - " तुम्हारी अशांति का कारण मालूम हो गया। हम कल तुम्हारे चलेंगे।"

विद्यानंद ने नम्रता से पूछा - "मुझे शांति मिल जाएगी ? अवश्य, परंतु कल अपने गाँव जाने की तैयारी करो। "

*****

पालू के मित्रों में लाला गणपतराय का पुत्र भोलानाथ हाँड़ाबड़ा सज्जन पुरुष था। उसे पालू के साथ प्रेम था। उसके मन की स्वच्छता, उसके भोलेपन, उसकी निस्वार्थता पर भोलानाथ तन - मन से न्यौछावर था। जब तक पालू लखनवाला में रहा, भोलानाथ ने सदा उसकी सहायता की। वे दोनों जोहड़ के किनारे बैठते, धर्मशाला में जाकर खेलते, मंदिर में जाकर कथा सुनते। लोग देखते तो कहते"कृष्ण-सुदामा की जोड़ी है ।" परंतु कृष्ण के आदर-सत्कार करने पर भी जब सुदामा ने वन का रास्ता लिया, तब कृष्ण को बहुत दुख हुआ। इसके पश्चात् उसको किसीने खुलकर हँसते नहीं देखा है।" भोलानाथ ने पालू का पता लगाने की बहुत चेष्टा की, परंतु जब यत्न करने पर भी

सफल्ता न हुई, तब उसके पुत्र सुखदयाल की ओर ध्यान दिया। प्रायः बालकराम के घर चले जाते और सुखदयाल को गोद में उठा लेते, चूमते, प्यार करते, पैसे देते। कभी-कभी उठाकर घर भी ले जाते । वहाँ उसे दूध पिलाते, मिठाई खिलाते और बाहर ले जाते। लोगों से कहते - "यह अनाथ है, इसे देखकर मेरा मन वश में नहीं रहता।" उसके साथ ताया - तायी घर में निर्दयता का व्यवहार करते थे और भोलानाथ का उसे प्यार करना तो उन्हें और भी बुरा लगता था । प्रायः कहा करते- " कैसा निर्दयी है, हमारी कन्याओं के साथ बात भी नहीं करता । कैसी गोरी और सुंदर हैं, जैसे मक्खन के पेड़े.. देखने से भूख मिटती है, परन्तु इसे सुखदयाल सिवा कोई पसंद ही नहीं आता । पसंद नहीं तो न सही, परंतु क्या यह भी नहीं हो सकता कि कभी-कभी उनके हाथ पर दो पैसे ही रख दे। " पर यह बात भोलानाथ के सामने कहने का उन्हें साहस न होता था । हाँ, उनका क्रोध बेचारे सुखदयाल सदा उदास रहने लगा। उसका मुख-कमल मुरझा गया। प्रेम जीवन की धूप है, वह उसे प्राप्त न था । जब कभी भोलानाथ आता, उसे पितृ-प्रेम का अनुभव होने लगता।

लोहड़ी का दिन था, साँझ का समय। बालकराम के द्वार पर पुरुषों की भीड़ थी, आँगन में स्त्रियों का जमघट था।कोई गाती थी, कोई हँसती थी, कोई आग में चावल डालती थी, कोई चिड़वे खाती थी । तीन कन्याओं के पश्चात् परमात्मा ने पुत्र दिया था । यह उसकी पहली लोहड़ी थी । बालकराम और उसकी स्त्री दोनों आनंद से प्रफुल्लित थे। बड़े समारोह से त्योहार मनाया जा रहा था। दस रूपये की मक्की उड़ गयी, चिड़वे और रेवडियाँ इसके अतिरिक्त । परंतु सुखदयाल की ओर किसी को भी ध्यान न था ।

वह घर से बाहर दीवार के साथ खड़ा लोगों की ओर तृष्ण दृष्टि से देख रहा एकाएक भोलानाथ ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा- "सुक्खू !"

सूखे धानों में पानी पड़ गया । सुखदयाल ने पुलकित होकर उत्तर दिया- "चाचा ! आज लोहड़ी है। तुम्हारी ताई ने तुम्हें क्या दिया ?"

"मक्की । "

और कुछ नहीं ? "

"नहीं।"

" और तुम्हारी बहनों को ?"

" मिठाई भी दी, संतरे भी दिए, पैसे भी दिए। "

भोलानाथ की आँखों में जल भर आया। भर्राए हुए स्वर से बोला- “हमारे घर चलोगे?"

“चलूँगा।”

“कुछ खाओगे?"

घर पहुँचकर भोलानाथ ने पत्नी से कहा- “इसे कुछ खाने कोदो।" भोलानाथ की तरह उसकी पत्नी भी सुखदयाल से प्यार करती थी। उसने बहुत-सी मिठाई उसके सामने रख दी । सुखदयाल मजे से खाने लगा। जब खा चुका तो चलने को तैयार हुआ । भोलानाथ ने कहा- 'इतनी जल्दी काहे की है ?"

" ताई मारेगी । "

"क्यों मारेगी ?"

“ कहेगी - तू चाचा के घर क्यों गया था ? "

"तेरी बहनों को भी मार पड़ती है ?"

"नहीं, उन्हें प्यार करती है । "

भोलानाथ की स्त्री के नेत्र भर आए । भोलानाथ बोले- “जो मिठाई बची है, वह जब में डाल ले।"

सुखदयाल ने प्यासी आँखों से मिठाई की ओर देखा और उत्तर दिया-“न”

“क्यों?”

" ताई मारेगी और मिठाई छीन लेगी । "

" पहले भी कभी मारा है ?"

“हाँ”

“कितनी बार मारा है ? '

" कई बार मारा है । "

“किस तरह मारा है ?"

"चिमटे से मारा है । "

भोलानाथ के हृदय पर जैसे किसीने हथौड़ा मार दिया। उन्होंने ठण्डी साँस भरी औश्र चुप हो गए। सुखदयाल धीरे-धीरे अपने धर की ओर रवाना हुआ। परंतु उसकी बातें ताई के कानों तक उससे पहले ही जा पहुँची थीं। उसके क्रोध की कोई थाह नहीं थी । जब रातअधिक बीत गयी और गली-मुहल्ले की स्त्रियाँ अपने-अपने घर चली गयी, तो उसने सुखदयाल को पकड़कर कहा- "क्यों बे, कलमुँहे ! चाचा से क्या कहता था ?"

सुखदयाल का कलेजा काँप गया। डरते-डरते बोला- "कुछ नहीं कहता था । "

"तू तो कहता था - ताई मुझे चिमटे से मारती है। "

बालकराम पास खड़ा था, आश्चर्य से बोला- "अच्छा अब यह छोकरा मिट्टी उडाने पर उतर आया है । "

सुखदयाल ने आँखों ही आँखों में ताऊ की ओर देखकर प्रार्थना की कि मुझे इस निर्दयी से बचाओ । परंतु वहाँ भी क्रोध बेठा था। ताई ने कड़े स्वर में डाँट कर पूछा- -"क्यों, बोलता क्यों नहीं ?" 'अब न कहूँगा।"

" 'अब न कहूँगा। न मरता है, न पीछा छोड़ता है। खाने को देते जाओ, जैसे इसके बाप की जागीर पड़ी है । "

यह कहकर उसने पास पड़ा हुआ बेलन उठाया । उसे देखकर सुखदयाल बिलबिला उठा । परंतु अभी बेलन उसके शरीर पर पड़ा न था कि उसकी लड़की दौड़ती हुई आयी और कहने लगी- " चाचा आया है।"

सुखदेवी का हृदय काँप गया। वह बैठी थी, खडी हो गयी और बोली- "कौन-सा चाचा? गुजरातवाला ?"

"नहीं... पालू ।" "

सुखदेवी और बालकराम हैरान रह गए। जिस प्रकार बिल्ली को सामने देखकर कबूतर सहम जाता है, उसी प्रकार दोनों सहम गए। आज से दो वर्ष पहले जब पालू साधु बनने के लिए विदा होने आया था, तब सुखदेवी मन में प्रसन्न हुई थी, परंतु उसने प्रकट कियाथा मानो उसका हृदय इस समाचार से टुकड़े-टुकड़े हो गया। इस समय उसके मन में भय और व्याकुलता थी, परंतु मुख पर प्रसन्नता की झलक थी । वह जल्दी से बाहर निकली और बोली - " पालू ! "

परंतु वहाँ पालू के स्थान में एक साधु-महात्मा खड़े थे, जिनके मुख-मण्डल से तेज की किरणें फूट-फूटकर निकल रही थीं। सुखदेवी के मन को धीरज हुआ। परंतु एकाएक ख्याल आया- “यह तो वही हैं। वही मुँह, वही आँखें, वही रंग, वही रूप, परन्तु कितना परिवर्तन हो गया है।" सुखदेवी ने मुस्करा कर कहा - " स्वामी जी, नमस्कार करती हूँ।"

इतने में बालकराम अंदर से निकला और रोता हुआ स्वामी जी से लिपट गया। स्वामी जी भी रोने लगी, परन्तु यह रोना दुख का नहीं, आनंद का था। जब हृदय कुछ स्थिर हुआ तो बोले - “भाई, जरा बाल-बच्चों को तो बुलाओ, देखने को जी तरस गया। "

सुखदेवी अंदर को चली, परंतु पाँव मन-मन के भारी हो गए। सोचती थी- “यदि बालक सो गए होते तो कैसा अच्छा होता। सब बातें ढ़की रहतीं। अब क्या करूँ ? इस बदमाश सुक्खू के कपड़े इतने मैले हैं कि सामने करने का साहस नहीं पड़ता। आँखें कैसे मिलाऊँगी ? रंग में भंग डालने के लिए इसे आज ही आना था। दो वर्ष बाद आया। इतना भी न हुआ कि पहले ही लिख देता। "

इतने में स्वामी विद्यानंद अंदर आ गए। पितृ-वात्सल्य ने लज्जा को दबा लिया था। परंतु सुखदयाल और भतीजियों के वस्त्र और उनके रूप-रंग को देखा तो खड़े-के-खड़े रह गए। भतीजियाँ ऐसी थीं जैसे चमेली के फूल और सुक्खू ? जो कभी मैना के समान चहकता फिरता था, जिसकी बातें सुनने के लिए राह जाते लोग खड़े हो जाते थे, जिसकी नटखटी बातों पर प्यार आता था, अब उदासीनता की मूर्ति बना हुआ था। उसका मुँह इस प्रकार कुम्हलाया हुआ था, ।जिस प्रकार जल न मिलने से पौधा कुम्हला जाता हैं। उसके बाल रूखे थे और मुँह से गरीबी बरसती थी। उसके वस्त्र मैले-कुचैले थे, जैसे किसी भिखारी का लड़का हो। स्वामी विद्यानंद के नेत्रों में आँसू आ गए। सुखदेवी और बालकराम पर घड़ों पानी पड़ गया। बालकराम ने खिसियाकर कहा- “कैसी शरारती है, दिन रात धूप में खेलता रहता है। "

स्वामी विद्यानंद सब कुछ समझ गए, परंतु उन्होंने कुछ प्रकट नहीं किया और बोले - " मैं आज अपने पुराने कमरे में सोऊँगा, चारपाई डलवा दो।" एक रात का समय था। स्वामी विद्यानंद सुक्खू को लिए हुए अपने कमरे में पहुँचे। पुरानी बातें ज्यों-की-त्यों याद आ गयीं। यही कमरा था, जहाँ प्रेम के प्याले पिये थे। इसी स्थान पर बैठकर प्यार का पाठ पढ़ा था। यही वाटिका थी, जिसमें प्रेम पवन के मस्त झोंके चलते थे। कैसा आनंद था! अद्‌भुत बसंत ऋतु थी, जिसने शिशिर

के झोंके कभी देखे ही न थे। आज वही वाटिका उजड़ चुकी है, प्रेम का राज्य लुट चुका है, स्वामीविद्यानंद के मन में हलचल मच गयी। ,

परंतु सुक्खू का मुख इस प्रकार चमक रहा था, जैसे ग्रहण के बाद चन्द्रमा। उसे देखकर विद्यानंद ने सोचा- "मैं कैसा मूर्ख हूँ ! ताऊ और ताई जब इस पर सख्ती करते होंगे, जब अकारण इसको मारतेपीटते होंगे, जब इसके सामने अपनी कन्याओं से प्यार करते होंगे, उस समय यह क्या कहता होगा? इसके हृदय में क्या विचार उठते होंगे? यही कि मेरा पिता नहीं है, वह मर गया, नहीं तो मैं इस दशा में क्यों रहता। यह फूल था जो आज धूल में मिला हुआ है । है। इसके हृदय में धड़कन है, नेत्रों में त्रास है, मुख पर उदासी है। वह चंचलता, जो बच्चों का विशेष गुण होता है, इसमें नाम को नहीं । वह हठ, बालकों की सुन्दरता है, इससे विदा हो चुकी है। यह बाल्यावस्था में जोही बूढ़ों की तरह गंभीर बन गया है। इस अनर्थ का उत्तरदायित्व मेरे सिर है, जो इसे यहाँ छोड़ गया। इन्हीं विचारों में झपकी आ गयी तो क्या देखते हैं कि वही ऋषीकेश कापर्वत हैं, वही कंदरा। उसमें देवी की मूर्ति है और वह उसके सामने रो-रोकर कह रहे हैं- "माता, दो वर्ष हो गए, अभी तक शांति नहीं मिली। क्या यह जीवन रोने में ही जाएगा ? "

एकाएक ऐसा प्रतीत हुआ जैसे पत्थर की मूर्ति के होंठ हिलरहे हैं। स्वामी विद्यानंद ने अपने कान उधर लगा दिए। आवाज आयी - "तू क्या माँगता है ? यश ? "

"नहीं.. मुझे उसकी आवश्यकता नहीं । "

" तो फिर जगत् - दिखावा क्यों करता है?"

"मुझे शांति चाहिए। "

"शांति के लिए सेवा-मार्ग की आवश्यकता है । पर्वत छोड़ और नगर में जा । वहाँ दुखी जन रहते हैं। किसी के घाव पर फाहा रख, किसी टूटे हुए मन को धीरज बँधा.. परन्तु यह रास्ता भी तेरे लिए ठीक नहीं। तेरा पुत्र है, तू उसकी सेवा कर । तेरे मन को शांति प्राप्त होगी।"

यह सुनते ही स्वामीजी की आँखों से पर्दा हट गया । वह जागे, सारा भेद उन पर खुल चुका था कि मन की शांति कर्तव्य पालन से ही मिलती है। उन्होंने सुखदयाल को जोर से गले लगाया और उसके सूखे मुँह को चूम लिया ।

लघु प्रश्न

1. संन्यासी कहानी के लेखक का संक्षिप्त परिचय दीजिए?

उ) 'संन्यासी' कहानी के लेखक सुदर्शन जी हैं। आप हिन्दी कहानी - साहित्य के अग्र अग्रणी लेखकों में एक हैं। आप प्रेमचंद के समकालीन थे। जीवन का यथार्थ, नीति का उपदेश एवं पात्रों का सजीव चित्रण आपकी कहानियों की विशेषताएँ हैं।

2. पालू कौन था और उसका स्वभाव कैसा था?

उ) गुजरात में पालू नामक एक युवक रहता है। वह बेरोजगार, आलसी और गैर जिम्म दार है। रामलीला जैसे अवसरों पर नाच गान करना, लोगों का मनोरंजन करना ही उसका काम है। उसके अवहार से माँ-बाप बहुत दुः खी होते हैं।

3. 'संन्यासी' कहानी के आधार पर मन की शांति कैसे मिलेगी ?

उ) 'संयासी' कहानी के आधार पर मन की सच्ची शांति धन या प्रतिष्ठा में नहीं है। अपना कर्तव्य पूरा करने में ही, मन को, सच्ची शांति मिलेगी।

4. पालू के परिजनों की मौत किस प्रकार हो गयी ?

उ) पालू के परिजनों की मौत हैजे की बीमारी से हो गयी। गाँव में हैजे की बीमारी फैलती है। हैजे के कारण पालू की पत्नी और पिता-माता की मौत हो जाती है।

5. संन्यास ग्रहण करने के बाद पालू का नाम क्या पड़ गया था?

उ) संन्यास ग्रहण करने के बाद पालू का नाम, 'स्वामी विद्यानंद पड़ गया था। वह हरिद्वार में, थोड़े समय में ही बहुत प्रसिद्ध बन जाता है।

संदर्भ सहित व्याख्या :

1, लखनवाला, जिला गुजरात का पालू उन मनुष्यों में था, जो गुणों की गुत्थी कहे जाते हैं।

संदर्भ –

'संन्यासी' कहानी के लेखक सुदर्शन जी हैं! आप हिन्दी कहानी-साहित्य के अग्रणी लेखकों में से एक हैं। आप प्रेमचन्द के समकालीन थे। जीवन यथार्थ, नीति का उपदेश एवं पात्रों का संजीब चित्रण आपकी कहानियों की विशेषताएँ हैं। प्रस्तुत कहानी 'संन्यासी' में उन्होंने अत्यंत सरल शैली में एक जीवनसत्य का उद्बोधन किया। प्रस्तुत वाक्य इस कहानी की आरंभिक पंक्ति है जो कहानीकार, इस कहानी के नायक- पालू के परिचय में लिखते हैं।

व्याख्या :

गुजरात में पालू नामक एक युवक रहता है। यदि वह गाँव में न होता तो होलियों में झाँकियों का, दीवाली पर जुए का और दशहरे पर रामलीला का प्रबंध कठिन हो जाता था। वह बाँसुरी और घड़ा बजाने में उस्ताद ही नहीं, अपितु हीर-राँझे का किस्सा पढ़कें सुनाने भी निपुण था। इन्हीं सब गुणों से पालू परिपूर्ण था, इसीलिए उसे गुणों की, गुथली कहा जाना उचित है।

विशेषता : इस वाक्य से पालू का व्यवहार प्रकट हो रहा है।

2. तेरा पुत्र है, तू उसकी सेवा कर । तेरे मन को शांति प्राप्त होगी।"

संदर्भ -

'संन्यासी' कहानी के लेखक सुदर्शन जी हैं! आप हिन्दी कहानी-साहित्य के अग्रणी लेखकों में से एक हैं। आप प्रेमचन्द के समकालीन थे। जीवन यथार्थ, नीति का उपदेश एवं पात्रों का संजीब चित्रण

आपकी कहानियों की विशेषताएँ हैं। प्रस्तुत कहानी 'संन्यासी' में उन्होंने अत्यंत सरल शैली में एक जीवनसत्य का उद्बोधन किया। प्रस्तुत वाक्य कहानी के अंत में देवी माँ प्रकट होकर पालू से कह रही हैं।

व्याख्या -

पालू गुजरात का एक गैर जिम्मेदार युवक था। हैजे के कारण उसके परिवार की मौत हो जाती है और वह अपने इकलौते पुत्र को छोडकर अपनी जिम्मेदारी से भाग जाता है। स्वामी विद्यानंद नाम से एक संन्यासी बनकर बहुत धन और यश कमा लेता है किंतु उसके मन को शांति प्राप्त नहीं होती। गुरु के परामर्श के अनुसार वह अपने गाँव चला जाता है और अपने बेटे को बडी दयनीय स्थिति में देखता है। उस रात को नींद में वह एक सपना देखता है। सपने में उसके साथ देवी माँ कहती है, कि 'तू अपनी जिम्मेदारी से दूर हट गया, इसलिए असंतुष्ट रहा। मन की शांति कर्तव्य - पालन से ही मिलती है। विद्यानंद अपना कर्तव्य जानता है वह अपने बेटे को गले लगाकर उसकी जिम्मेदारी स्वीकार करता है।

विशेषता

"मन की शान्ति कैसे प्राप्त होग यही इस कहानी का मुख्य बिन्दु हैं। जाएगी.

कहानी का सारांश

'संन्यासी' कहानी के लेखक सुदर्शन जी हैं। आप हिन्दी कहानी-साहित्य के अग्रणी लेखकों में से एक हैं। आप प्रेमचन्द के समकालीन थे। जीवन यथार्थ, नीति का उपदेश एवं पात्रों का संजीब चित्रण आपकी कहानियों की विशेषताएँ हैं।

कहानी का स्थल गुजरात है गुजरात में पालु नामक एक युवक रहता है। वह बेरोजगर, आलसी और गैरजिम्महार है। रामलीला जैसे अवसरों घर नाच-गान करना, लोगों का मनोरं करना ही उसका काम है। उसके व्यवहा से साँ- बाप बहुत दुःखी होते हैं। उसे जिम्मेदारी, सिखाने के लिए उत्सर विवाह करवा देते हैं। पत्नी के आने के बाद वह और अधिक आलसी बनकर हमेशा घर में ही रहने लगता है। और बाप कीं गालियों का भी उसके ऊपर असर नहीं पड़ता। पालू एक बेटे का बाप भी बन जाता है किन्तु उसका व्यवहार नहीं बदलता।

उसी समय गाँव में हैजे की बीमारी फैलती है। हैजे के कारण पालू की पत्नी और पिता-माता की मौत हो जाती है। पत्नी की मृत्यु से पालू मानो पागल बन जाता है। वह अपने पुत्र सुखदयाल को बड़े भाई के घर छोड़कर हरिद्वार चला जाता है। वहाँ एक संन्यास के रूप में उसका परिवर्तन हो जाता है। उसका नाम स्वामी विद्यानंद बन जाता है।1 अब इसी 'स्वामी विद्यानंद' के नाम, से वह थोड़े समय में ही बहुत प्रसिद्ध बन जाता है। अब धन, कीर्ति-प्रतिष्ठा और संपत्ति की कोई कमी नहीं किन्तु विद्यानंद को मन की शान्ति नहीं मिलती । वह सदा असंतुष्ट और व्याकुल रहता है। वह बहुत दिन से इस चिंता के कारण व्याकुल है। गुरु ताड लेते हैं कि दाल में कुछ काला है। पूछने पर स्वामी विद्यानंद रोकर अपनी समस्या को गुरु के सामने प्रस्तुत करता है। उससे गुरू बताते हैं कि 'तुम अपनी जिम्मेदारी भूलकर फिरते हो। इसलिए तुम्हें मन की शांति नहीं मिली। मनुष्य की सेवा और सामाजिक कार्यों से मन की शांति मिल सकती है। किंतु तुम्हारी अपनी निजी संतान है। पहले उसके प्रति अपना दायित्व निभाने का समय आया। इसलिए निजी गाँव जाकर उसकी देख भाल करो।

गाँव में सुखदयाल बहुत दीनावस्था में रहता है। ताई के घर उसे कई यातनाएं सहनी पड़ती है। स्वामी विद्यानंद उसकी हालत देखकर रोता है। उसे गले लगाकर सोता है। रात को नींद में देवी माँ कहती है कि 'तु अपनी जिम्मेदारी से दूर हट गया, इसलिए असंतुष्ट रहा। मन की शांति कर्तव्य पालन से ही मिलता है।' विद्यानंद अपना कर्तव्य जानता है वह अपने बेटे को गले लगाकर उस जिम्मेदारी को सहर्ष स्वीकार करता है।

मन क़ी सच्ची शांति धन यां प्रतिष्ठां में नहीं है। अपना कर्तव्य पूरा करने में ही मन को सच्ची शांति मिलेगी । पालू अपनी जिम्मेदारी से पलायन करके बड़ा संन्यासी बन जाता धन कमाता है, फिर भी उसके मन से असंतोष नहीं जाता। अपने बेटे को अपना बनाकर कर्तव्य पालन करने के बाद ही वह सुखी बनता है- यहीं इस कहानी का संदेश है।

पंचम खण्ड

हिंदी भाषा की परंपरा और विरासत

हिंदी भाषा एक बहुत ही महत्वपूर्ण और समृद्ध भाषा है जो भारतीय सभ्यता और संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह भारत की राष्ट्रभाषा भी है और दुनिया में इसके करीब ५०० मिलियन से अधिक प्रवासी और मातृभाषा वाले लोग हैं। हिंदी भारत के विभिन्न भागों में बोली जाती है और इसमें विभिन्न गाने, कविताएँ, उपन्यास और रहस्यवादी कथाएँ हैं। हिंदी भाषा की उत्पत्ति का संदर्भ संस्कृत से जुड़ा है, जो कि एक प्राचीन भारतीय भाषा है। इसके व्याकरण, शब्दावली और बोलचाल के प्रारूप भी संस्कृत से प्रभावित हैं, जिससे इसकी समृद्धता बढ़ी है। हिंदी का स्वरुप विभिन्न भाषाओं के संगम से विकसित हुआ है, जिसमें प्राचीन अवधी, ब्रज, मैथिली, विविध प्रदेशों के अपभ्रंश, पश्चिमी हिंदी एवं पूरबी हिंदी की बोलियों सहित खड़ीबोली शामिल हैं।

हिंदी की साहित्यिक परंपराएँ भी बहुत विविध हैं। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता, और पुराण हिंदी साहित्य के प्रमुख स्रोत हैं। इनके अलावा, भक्ति-काव्य, रसिक और सूफी साहित्य भी हिंदी की समृद्ध परंपराओं में शामिल हैं। ये सभी स्रोत हिंदी भाषा की गहरी संस्कृति और विचारधारा को प्रकट करते हैं।

हिंदी की लिपि देवनागरी है, जो कि एक विशेष और सुलभ लिपि है जो इसे लिखने और पढ़ने के लिए अधिक प्रचलित बनाती है। इसलिए, विभिन्न लेखन परंपराएँ और संस्कृति की एकता को बनाए रखने में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिंदी भाषा का उपयोग दर्शाने, सिखाने और व्यक्ति के भावनाओं को व्यक्त करने में भी होता है। इसके शब्द, मुहावरे और व्याकरण ने भारतीय समाज में एक सामूहिक पहचान का स्थापना की है और इसकी सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखा है। हिंदी के विकास में अनेक भाषाओं का संयोग और संवाद शामिल है। इसकी भाषा समृद्धता और व्यापकता भारतीय सभ्यता के एक महत्वपूर्ण पहलू को दर्शाती है, जो विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों के बीच एकता और सामंजस्य को बढ़ावा देती है। हिंदी भाषा के संदर्भ में उसकी गहरी और समृद्ध इतिहासिक प्रतिभा है, जो इसे एक महत्वपूर्ण भारतीय भाषा बनाती है। यह न केवल

भाषा के रूप में बल्कि साहित्य, धर्म, समाज, और संस्कृति के साथ जुड़े हर पहलू में भी एक प्रमुख भूमिका निभाती है।

हिंदी के शब्द स्त्रोत- परिचय :

हिंदी भाषा के शब्द स्रोतों का विश्लेषण करते हुए, हमें देखने में आता है कि इनकी समृद्धता और विविधता भारतीय सभ्यता और संस्कृति की अद्वितीयता को प्रकट करती है। हिंदी भाषा के शब्द स्रोतों में सबसे पहला महत्वपूर्ण स्रोत संस्कृत है। संस्कृत भाषा न केवल हिंदी के शब्दावली और व्याकरण को प्रभावित करती है, बल्कि इसके भाषाई निर्माण और स्वरूप में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। संस्कृत के ग्रंथ, जैसे कि वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता, और पुराण, हिंदी के शब्दावली के मौलिक स्त्रोत हैं।

दूसरा महत्वपूर्ण स्रोत प्राकृत भाषा है, जो अपभ्रंशित संस्कृत की एक विशेष रूप है। प्राकृत से हिंदी में कई शब्द और उनके उपयोग में आए हैं, जो इसे और भी समृद्ध बनाते हैं। इसके अलावा, अवधी, ब्रज और खड़ी भाषाएँ भी हिंदी के शब्दावली के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये भाषाएँ भारतीय साहित्य और संस्कृति के विविध पहलुओं को प्रकट करती हैं और भाषा की समृद्धता में समर्पित हैं।

हिंदी की लिपि देवनागरी भी इसके शब्द स्रोतों का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह लिपि हिंदी के लेखन और पठन को सुलभ बनाती है और इसकी साहित्यिक परंपराओं को संजोकर रखती है। इस लिपि ने हिंदी के शब्दावली को व्यापक बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हिंदी की समृद्धता में लोकप्रिय कवियों, संतों और समाज के प्रति विशेष ध्यान देने वाले व्यक्तियों का भी बड़ा योगदान है। उनके ग्रंथ, दोहे, और पद काव्य हिंदी भाषा के शब्द स्रोतों में एक विशेष स्थान रखते हैं और इसे साहित्यिक दृष्टिकोण से और भी समृद्ध बनाते हैं।

हिंदी व्याकरण – काल विवेचन

सूचना के अनुसार काल बदलकर लिखिए ।

1. मैं फल खरीदता हूँ। (भविष्यत् काल में बदलकर लिखिए ।)

ज. मैं फल खरीदूँगा ।

2. आज मंत्रीजी आते हैं । (भूतकाल में बदलकर लिखिए ।)

ज. आज मंत्रीजी आये।

3. वह दान देगा। (वर्तमान काल में बदलकर लिखिए ।)

ज. वह दान देता है।

4. मैं दूध लाया । (वर्तमान काल में बदलकर लिखिए ।)

ज. मैं दूध लाता हूँ।

5. हम हिन्दी सीखते हैं । (भूतकाल में बदलकर लिखिए ।)

ज. हमने हिन्दी सीखी।

6. राम स्कूल में नहीं है । (भूतकाल में बदलकर लिखिए ।)

ज. राम स्कूल में नहीं था ।

7. हम सिनेमा देखते हैं। (भविष्यत् काल में बदलकर लिखिए ।)

ज. हम सिनेमा देखेंगे।

8. लड़का घर गया। (अपूर्ण वर्तमान काल में बदलकर लिखिए ।)

ज. लड़का घर जा रहा है।

9. सीता किताब पढ़ती है। (पूर्ण भूतकाल में बदलकर लिखिए।)

ज. सीता ने किताब पढ़ी थी।

10. मैंने काम किया। (भविष्यत् काल में बदलकर लिखिए ।)

ज. मैं काम करूँगा।

11. वह दिल्ली गया। (वर्तमान काल में बदलकर लिखिए।)

ज. वह दिल्ली जाता है ।

12. कृष्ण रोटी खाता है। (भूतकाल में बदलकर लिखिए।)

ज. कृष्ण ने रोटी खायी।

13. देवी गीत गा रही है। (भविष्यत् काल में बदलकर लिखिए ।)
ज. देवी गीत गायेगी।

14. राजा युद्ध करता है। (संदिग्ध भूतकाल में बदलकर लिखिए।)
ज. राजा ने युद्ध किया होगा ।

15. वे मैदान में खेलते हैं। (भविष्यत् काल में बदलकर लिखिए ।)
ज. वे मैदान में खेलेंगे।

16. हम बाजार जाते हैं। (सामान्य भूतकाल में बदलकर लिखिए ।)
ज. हम बाजार गये।

17. उसने काव्य लिखा। (अपूर्ण भूतकाल में बदलकर लिखिए ।)
ज. वह काव्य लिख रहा था ।

18. हम गाड़ी खरीदेंगे। (सामान्य वर्तमान काल में बदलकर लिखिए।)
ज. हम गाड़ी खरीदते हैं।

19. वह गीत सुनता है। (पूर्ण भूतकाल में बदलकर लिखिए ।)
ज. उसने गीत सुना था ।

20. रवि बाजार गया। (संदिग्ध भूतकाल में बदलकर लिखिए ।)

ज. रवि बाजार गया होगा ।

21. मैंने काम किया। (अपूर्ण वर्तमान काल में बदलकर लिखिए।)

ज. मैं काम कर रहा हूँ ।

22. उसने पाठ पढ़ा। (भविष्यत काल में बदलकर लिखिए ।)

ज. वह पाठ पढ़ेगा।

23. हम रोज कसरत करेंगे। (अपूर्ण वर्तमान काल में बदलकर लिखिए।)

ज. हम रोज कसरत कर रहे हैं ।

24. प्रेमचन्द उपन्यास लिखते हैं। (पूर्ण भूतकाल में बदलकर लिखिए ।)

ज. प्रेमचन्द ने उपन्यास लिखा था ।

*****